चन्दामामा
दीपावली विशेषांक
1/-

कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये !

क्योंकि : एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेंटल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल ख़त्म कर देता है, और कोलगेट-विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का...अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

दांत को यदि पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी वे उतने साफ़ निखरें—एक डिब्बा महीनों चलता है।

COLGATE
DENTAL CREAM

नया !
सुपर साइज़ ख़रीदिये
...पैसा बचाइये !

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

DC-G.38 HN

अपने घर को रमणीय और मनोहर बनाने
अधुनातन और नवीन बनाये रखने

सदा हम से पूछिये।

AMARJOTHI FABRICS

BEDSPREADS - FURNISHINGS - FANCY TOWELS

बनानेवाले:
अमरज्योति फेब्रिक्स,
पो. बा. नं. २२, करूर (द. भा.)
शाखाएं: बंबई - दिल्ली

मद्रास के प्रतिनिधि:
अमरज्योति ट्रेडर्स,
११, गोडाउन स्ट्रीट, मद्रास - १
दूरभाष: २४८६४

Ensure Your Success

With
GLOBE
ACCURACY

Mfg. **G. S. KASHYAP & SONS** Pataudi House, Darya Ganj, Delhi-6
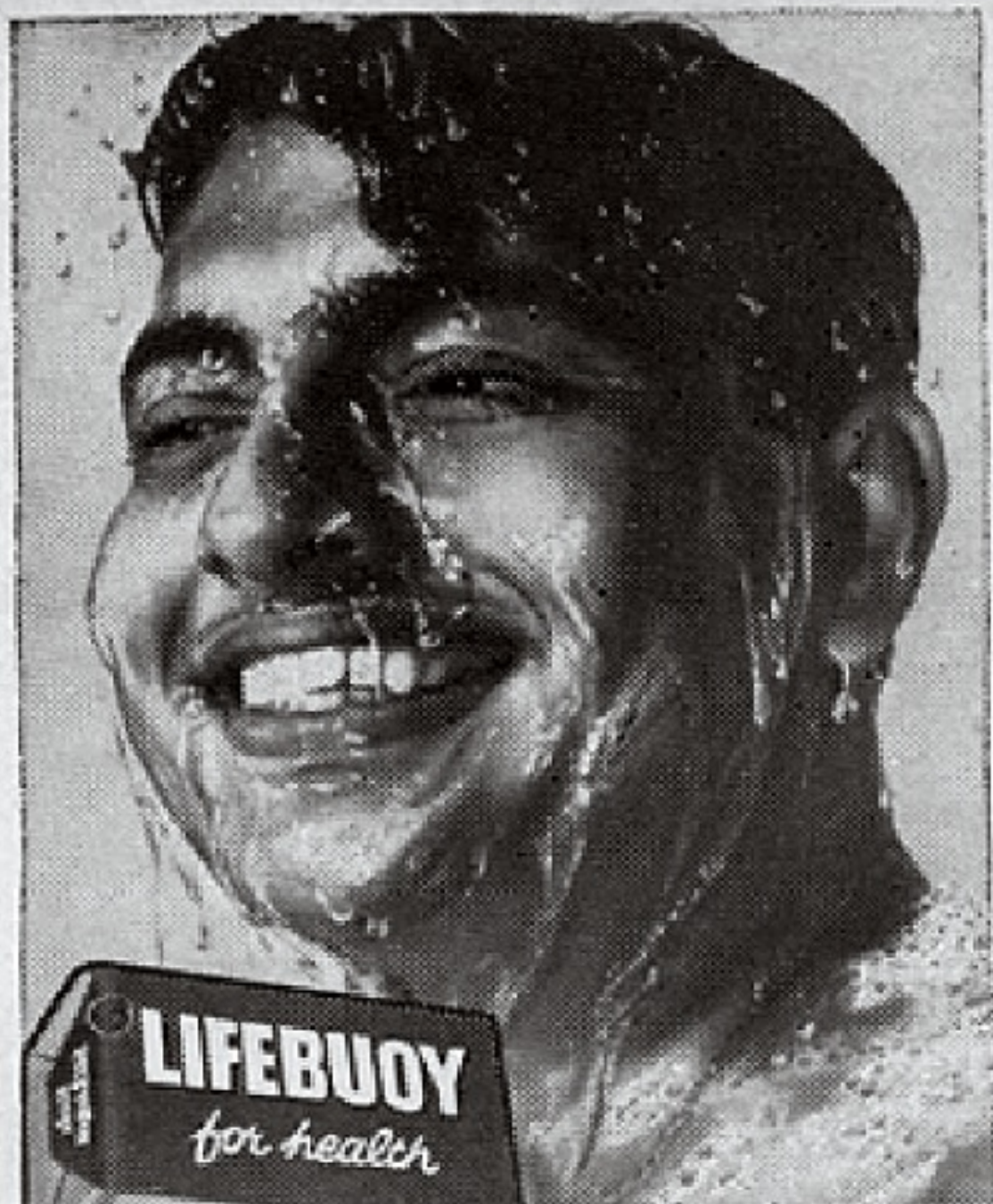
LIFEBUOY
for health

खेत को चाहिये पानी

और पौधों को खाद

बच्चों को चाहिये टॉनिक

मधुर हो जिसमें स्वाद

बच्चों को स्वस्थ और सबल
बनाने के लिये सदा पिलाइये

लाल-शर

(डाबर बालामृत)

डाबर

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) प्रा० लि०,
कलकत्ता-२६

नवम्बर १९५९

विषय - सूची

इनके अलावा "पुराण चन्द्र", "गगन का चांद"
गान्धी-अलबम अन्य आकर्षण हैं।

सब से मजेदार क्या ?

चंपक

शीला ने जेबखर्च से आइसक्रीम खाई.
मीरा ने बाइस्कोप देखा.
मुन्नू सरकस जा पहुंचा.
लेकिन बबलू ने चंपक खरीदा.
क्यों ?

चंपक में आइसक्रीम से भी मजेदार कहानियां और बाइस्कोप व सरकस से भी दिलचस्प और जानकारी बढ़ाने वाले लेख होते हैं. साथ ही होती हैं मन लुभा लेने वाली कविताएं, सूझबूझ वाली पहेलियां और चीकू की अनोखी कलाबाजियां।

तुम भी अगर एक बार चंपक पढ़ लोगे तो उस का हर अंक खरीदे बिना न रह सकोगे !

पत्रपत्रिकाओं की दुकान से आज ही चंपक खरीदो.

नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए पंद्रह पैसे के डाक टिकट इस पते पर भेजो:

दिल्ली प्रेस · नई दिल्ली-55

उच्चाकांक्षी,
उद्योगी नौजवान
उन्नति के पथ पर
उसकी साइकिल है फिलिप्स

फिलिप्स बेहद मजबूत होता है—असली यानी चढ़ाये इस्पात द्वारा जैसे-जैसे इस्तेमाल के लायक बनी होती है। फिलिप्स देखने में खूबसूरत—इसकी चमकीली और जबरदस्त बनावट आपकी सुरुचि के अनुकूल है। यह एक ऐसी बेहतरीन साइकिल है जो आप जैसे नौजवानों के लिये ही बनाई गई है।

फिलिप्स साइकिल आपके लिए ही बनी है

जन्म दिन की खुशियां !
जन्म दिन की खुशियां पारले पिपरमिंट
और रोजमिंट से मनाओ। इनका स्वाद कितना
मज़ेदार है। वाह, भई वाह मज़ा आ गया।
भई, तुम्हें जन्म दिन मुबारक हो।
पारले
पिपरमिंट और रोजमिंट
कितनी मज़ेदार ठंडक वाली पिपरमिंट
पारले का पैकेट खरीदो आज !
ROSE
PARLE
everest/508a/PP HN

पालन पोषण सही कीजिए ;
बच्चों को बोर्नविटा दीजिए !

इस क्षण
क्या आप का टूथपेस्ट
दांतों की सड़न का
मुकाबला कर रहा है ?
केवल सिग्नल में ही
लाल धारियां हैं, जो आप के दांतों
की २४ घंटे सुरक्षा करती हैं !
Signal
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
ज्योति पर्व दीपावली के इस विशेषांक में हम पौराणिक चन्द्रमा तथा 'गगन चंद्र' नामक दो विशेष रचनाओं के साथ गांधी अलबम भी दे रहे हैं। अतः इसका मूल्य हमें बढ़ाना पड़ा। हम केवल लागत मूल्य पर ही यह विशेषांक अपने पाठकों को दे रहे हैं। राष्ट्रपिता पूज्य गांधीजी की शताब्दी सारे संसार में इस वर्ष मनायी जा रही है। हम गांधीजी की जीवनी धारावाही दे ही रहे हैं, साथ ही उनकी जीवनी से संबंधित अलबम भी दे रहे हैं।
वर्ष: २१ नवंबर १९६९ अंक: ३

माला की गवाही

एक गाँव में एक किसान दंपति था। वे दिन भर खेत में काम करके शाम को घर लौटते थे। एक दिन शाम को वे खेत से घर लौट रहे थे। रास्ते में एक पेड़ पर कौवे के घोंसले में कोई चीज चमकती दिखाई दी। किसान पेड़ पर चढ़ा। चमकनेवाली उस चीज को लेकर उतर आया। वह मोतियों का एक गुच्छा था। उस दंपति ने घर लौटकर मोतियों को गिनकर देखा। उसमें पूरे दो सौ मोती थे।

"आधे मोतियों से एक माला बन सकती है!" किसान की औरत ने कहा।

"सुनार के हाथ देकर माला बनवा दूँगा!" किसान ने अपनी पत्नी को समझाया।

दूसरे दिन किसान सौ मोती लेकर एक सुनार के घर पहुँचा और बोला—"देखो जी, इन सौ मोतियों की एक माला बनाकर दे दो।" सुनार ने मोतियों को गिनकर देखा। पूरे सौ मोती थे। उसने एक सप्ताह में माला बनाकर देने का वचन दिया।

माला बनकर तैयार हो गयी। सुनार की पत्नी को वह माला बहुत पसंद आयी। उसने कहा—"यह माला मुझे चाहिए।" सुनार ने समझाया कि यह माला तो एक किसान की है। पर उसकी पत्नी ने देने से साफ़ इनकार किया।

एक सप्ताह बीत गया। किसान ने आकर सुनार से अपनी माला माँगी। सुनार ने कहा—"देखो जी, माला पूरे होने को है, दो दिनों में दे देता हूँ।"

किसान चला गया। दो दिन बाद लौटकर पूछा। सुनार टालता ही गया। इस तरह एक महीना बीत गया।

कुमारी सरिता

किसान को गुस्सा आया। उसने कहा–"लगता है कि तुम माला बनाने की हालत में नहीं हो। मैं और कहीं बनवा लेता हूँ। मेरे मोती लौटा दो।"

इस पर सुनार ने भी तैश में आकर कहा–"तुमने मोती मुझे कब दिये?"

"ओह, तुम दगा देने पर तुल गये हो? मैं अदालत में फ़रियाद करूँगा! तब पछताओगे।" किसान ने धमकी दी।

"बड़ी खुशी से फ़रियाद करो! मैं भी देखूँगा कि तुम मुझ से कैसे वसूल करोगे? तुम्हारे पास ऐसे बढ़िया मोती आये कैसे?" सुनार ने भी ललकारा।

फ़रियाद करने से किसान को भी संकोच हुआ। लेकिन उसकी पत्नी ने उसे समझाया–"हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं। हमने चोरी थोड़े ही की है! यह सुनार चोर मालूम होता है! हम न्यायाधीश के पास जाकर सच्ची बात बता देंगे। सुनते हैं कि वे बड़े धर्मात्मा हैं।"

किसान के पास जो सौ मोती बचे थे, उन्हें भी लेकर वह न्यायाधीश के पास पहुँचा और उसने सारी कहानी उन्हें समझा दी। न्यायाधीश ने किसान से कहा–"तुम ये मोती मेरे पास छोड़कर चले जाओ। पर किसी से यह न बताओ कि तुमने मेरे पास आकर फ़रियाद की है।"

न्यायाधीश का बुलावा पाकर सुनार उनकी सेवा में पहुँचा। न्यायाधीश ने उसके आगे एक थैली रखते हुए कहा–"देखो, इसमें सौ मोती हैं। इनकी एक माला बनाकर दे सकते हो? मुझे जल्द चाहिए।"

"जी हुज़ूर! परसों शाम तक मैं माला बनवाकर ले आऊँगा।" सुनार ने कहा।

सुनार मोतियों को गिने बिना थैली घर ले आया। घर पर गिनकर देखा तो उसमें सौ के बदले छियानबे मोती ही थे। उसने सोचा कि फिर न्यायाधीश के यहाँ

जाकर यह कहने से कि इसमें सिर्फ छियानवे ही मोती हैं, वे सोचेंगे कि मैंने चार मोती हड़प लिये। वह सोच ही रहा था कि उसे किसान के लिए बनायी हुई माला की याद आयी। इस पर उसने निश्चय किया कि वह सौ मोतियों की माला ले जाकर न्यायाधीश को दी जाय और छियानवे मोतियों से एक दूसरी माला बनाकर अपनी पत्नी को दे दी जाय।

सुनार के सुझाव को उसकी पत्नी ने मान लिया। दो दिन बाद सुनार माला लेकर न्यायाधीश के दरबार में पहुँचा। माला उनके हाथ देकर बोला–"हुजूर, मैंने आपकी माला तैयार कर दी है।"

न्यायाधीश ने मोतियों को गिनकर देखा। तब कहा–"लगता है कि यह माला तुमने किसान के लिए बनाकर रखी है। इसमें सौ मोती हैं। मैंने तुमको छियानवे ही मोती दिये थे।"

सुनार का कलेजा धक् धक् करने लगा। वह बोला–"नहीं हुजूर! यह माला मैंने आप ही के लिए बनायी है। आपने मेरे हाथ सौ मोती दिये थे। मैं उस किसान को जानता तक नहीं।"

न्यायाधीश ने क्रोध में आकर कहा–"दुष्ट! मैंने तुम्हारी दगाबाजी का पता लगाने के लिए यह स्वांग रचा। मेरे पता लगाने के बाद भी तुम मुझे धोखा देना चाहते हो? मैंने जान-बूझकर ही तुम्हें छियानवें मोती दिये। फिर कभी ऐसा धोखा दोगे तो तुम्हें कठिन दण्ड दूँगा। मैंने जो मोती दिये थे, उन्हें ले आओ। मुझे माला की जरूरत नहीं।"

सुनार ने मोती लाकर न्यायाधीश के हाथ सौंप दिये। किसान की माला में जो सोने का तार पिरोया था, उससे भी वह हाथ धो बैठा और उल्टे उसे अपनी पत्नी की झिड़कियाँ भी खानी पड़ीं।

बौने

अंगदेश के एक छोटे से गाँव में एक बौने दंपति था। वे दोनों स्वभाव के बड़े अच्छे थे। गाँव भर के लोग उन दोनों के व्यवहार को देख बहुत प्रसन्न थे। उनके नाम मकर और मकरी थे।

एक बार गरमी के दिनों में उनके गाँव का तालाब बिलकुल सूख गया। पीने के लिए भी पानी मिलना मुश्किल था। इसलिए गाँव के लोग बड़ी दूर से कांवड़ी से पानी लाया करते थे। लेकिन बौने परिवार को यह काम बड़ा कठिन मालूम हुआ। इसलिए मकर अपनी पत्नी को साथ ले ससुराल के लिए रवाना हो गया।

मकर ने एक छोटा सा ठेला बनवा लिया। उस में मकरी को बिठाकर ठेलते हुये ससुराल के लिए निकल पड़ा। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था। ठेले को ठेलना मकर के लिए मुश्किल जान पड़ा। फिर भी हाँफते-हाँफते किसी तरह वह ठेले को लिये आगे बढ़ा। एक दिन वे एक बबूल के बगीचे में पहुँचे।

उस बबूल के बगीचे में क्षुद्र पिशाच रहा करते थे। वे पिशाच जब-तब राहगीरों को तंग किया करते थे। बौने दंपति को देख दो पिशाचों के मन में उन्हें तंग करने की शैतानी सूझी। उन पिशाचों ने ठीक मकर और मकरी का रूप धारण किया। पिशाच मकर भी पिशाचिनी मकरी को एक ठेले में बिठाकर ठेलते हुये मकर के सामने आ पहुँचा।

किसी को सामने आते देख मकर ने सोचा कि उन साथियों से थोड़ी देर तक वार्तालाप करते हुये आराम करना ठीक होगा। लेकिन उनको भी बौने देख उनको

चन्द्रशेखर प्रसाद

अचरज हुआ और निकट आने पर उनको भी ठीक अपने ही तरह पाकर वह अचंभे में आ गया।

मकर कुछ बोल भी न पाया था कि पिशाच मकर ने आगे बढ़कर कहा—"मुझे सब लोग मकर कहते हैं। यह मेरी पत्नी मकरी है। मैं अपने ससुराल जाकर वहाँ से अपने गाँव की ओर लौट रहा हूँ। तुम लोग कौन हो और कहाँ जा रहे हो?"

पहले ही मकर भौंचक्का था, ये बातें सुनकर उसका दिमाग चकराने लगा। उसने पिशाच मकर से कहा—"तुम्हारी बातें मुझे बड़ी विचित्र मालूम होती हैं। मेरा नाम मकर है और यह मेरी औरत मकरी है। मेरे गाँव का तालाब सूख गया, इसलिए हम अपने ससुराल जा रहे हैं।"

इस पर पिशाच मकर झठ क्रोध में आया और बोला—"अरे भाई, हमको देख तुम्हें मजाक सूझ रहा है! इसका फल भोगोगे?" पिशाच मकर ने डाँट बतायी।

असली मकर को भी क्रोध आया। वह भी लड़ने को तैयार हो कर बोला—"हमको देख तुम्हें भी शायद मजाक सूझ रहा है! मुझे गुस्सा आयगा तो तुम्हें पछताना पड़ेगा!"

तब तक दोनों औरतें ठेलों में जो बैठी हुई थीं, झट उतर आयीं और दोनों पुरुषों में बीच-बचाव करते बोलीं—"ठहरिये, जल्दी न मचाइये!"

मकर ने अपने निकट आयी पिशाचिनी मकरी की बाँह पकड़कर खींचते हुए कहा—"तुम चुप रहो। मैं इस धूर्त की खबर लेता हूँ।"

"यह धोखा है बिल्कुल! तुम्हारी औरत वह नहीं, मैं हूँ।" ये शब्द कहते असली मकरी ने आकर मकर का हाथ पकड़ लिया।

"उसकी बात पर यकीन मत करो। असली मकरी मैं हूँ।" ये बातें कहते

पिशाचिनी मकरी ने असली मकर का दूसरा हाथ पकड़ लिया।

मकर की समझ में कुछ न आया। वह एक दम परेशान हो उठा। तब पिशाच मकर ज़ोर से हँस पड़ा और मकर से बोला–"चलो, हम थोड़ी दूर जाकर इस का फ़ैसला करें।"

दोनों एक झाड़ी के पीछे चले गये। पिशाच मकर ने असली मकर से कहा–"बात कुछ नहीं, अब चलो।" यह कहकर वह पुन: हँस पड़ा और उसी जगह वापस आ पहुँचा।

झाड़ी के दोनों तरफ़ से एक ही आकार के मकरों को देख असली मकरी की समझ में यह न आया कि उसका पति कौन है?

फिर मकरों के बीच वाद-विवाद छिड़ा। रास्ते चलनेवाले यात्री ठहरकर यह तमाशा देखने लगे। उन में एक बुद्धिमान था। उसने सलाह दी–"तुम दोनों झगड़े का फ़ैसला चाहते हो तो न्यायाधीश के पास चले जाओ। वरना तुम जितनी भी देर झगड़ा करोगे, उसका कोई फल न निकलेगा।"

इसपर दोनों मकर और मकरियाँ उस आदमी के साथ न्यायाधीश के यहाँ पहुँचे।

बदक़िस्मती की बात थी कि न्यायाधीश भी बौना था। उसने सोचा कि उसकी हँसी उड़ाने के लिए ही ये लोग उसके यहाँ फ़रियाद करने आये हुये हैं। तब उसने कहा–"मुझे भी कैसे मालूम होगा कि इनमें असल मकर कौन है और नकली कौन है। सच बताने तक इन चारों को इमली की बेंतों से पीटते जाओ।"

न्यायाधीश ने भटों को आदेश दिया। चारों लोग चिल्ला–चिल्लाकर आसमान को सर पर उठाने लगे। लोगों की बड़ी भीड़ लग गयी। बड़ा हो-हल्ला मचा।

ठीक उसी समय महामंत्री पालकी में सपरिवार उसी ओर से आ निकला। हो-हल्ला सुनकर वह पालकी से उतर आया और न्यायाधीश से पूछा–"यह कोई अदालत है या हाट है?"

न्यायाधीश ने महामंत्री के पैरों पर गिरकर कहा–"महामंत्रीजी, आप ही बताइये कि ये दोनों कैसा षड्यंत्र कर रहे हैं? इन दोनों पुरुषों में कोई फरक नहीं है। औरतें भी ठीक एक ही जैसी लगती हैं। मुझे धोखा देने ये लोग अदालत में आये हुये हैं। मैंने सच्ची बात निकलने तक इन्हें इमली की बेंतों से पीटने का आदेश दिया है।"

महामंत्री ने पल-भर सोचा। उसे लगा कि यह क्षुद्र पिशाचों का काम होगा। उसने कहा–"सुनो, इमली की बेंतों से ये लोग सच नहीं बतायेंगे। मेरे साथ भद्र नामक भूत वैद्य है। वह भैरव चक्र बनायेगा। उस में इन चारों को बिठाला देंगे तो इन क्षुद्र पिशाचों का दिमाग ठिकाने लग जायगा। अरे, सुनो तो, भूत वैद्य भद्र को बुलाओ।"

दूसरे ही क्षण पिशाच मकर और पिशाचिनी मकरी गायब हो गयी। महामंत्री ने असली मकर व मकरी से कहा–"अब तुम लोग अपने रास्ते चलो, पर याद रखो कि रास्ते में क्षुद्रपिशाचों से पाला पड़े तो उनसे न बोलो। तुम अपने रास्ते चलोगे तो वे तुम्हारी कोई हानि नहीं करेंगे।"

इतने में न्यायाधीश ने लौट कर कहा–"महामंत्रीजी, लगता है कि आप के परिवार में कोई भद्र नामक व्यक्ति है ही नहीं?"

"अरे, कोई बात नहीं! अब उसकी ज़रूरत भी तो नहीं है।" यह कहते महामंत्री पालकी पर सवार हो आगे बढ़ गया।

शिथिलालय

[२२]

[अघोरी लोग शिखिमुखी से सहानुभूतिपूर्ण बातें कहकर चले गये। रात के वक़्त दुश्मन ने धोखे से उन पर जो चीता भेजा, उसे शिखिमुखी वगैरह ने मार डाला। दुश्मन की मदद करनेवाले जांगला को शिखिमुखी ने आदेश दिया कि वह अपने घायल दोस्त का पता बतावे। इसके बाद–]

मशाल की रोशनी में शिखिमुखी विक्रम को साथ लिये झाड़ियों की बगल में चलते, घायल दुश्मन की खोज करने लगा। उन्हें एक झाड़ी के पास खून के दाग दिखाई दिये। वहाँ पर टूटी हुई टहनियाँ व पत्ते भी बिखरे पड़े मिले।

"विक्रम, दुश्मन इसी झाड़ी के पास तुम्हारे बाण से घायल हुआ है, लेकिन किसी तरह वह भाग गया है। सबेरा होने को है। यहाँ पर बेकार वक़्त क्यों काटना है? चलो, हम यात्रा की तैयारी करेंगे। हमें विलंब नहीं करना है।" शिखिमुखी ने कहा।

"हमें रास्ते दिखाने में मदद देनेवाला कौन है? यह तो साबित हो गया कि जांगला दुश्मन का साथी है। उसको

साथ ले जाना भी खतरे से खाली नहीं है, दोस्त!" विक्रमकेसरी ने जवाब दिया।

"चाहे वह दुश्मन की मदद करनेवाला भले ही क्यों न हो, इस वक्त वह हमारे अधीन है। कामाख्यापुर से निकलते समय इसने हमें वादा किया है कि यह हमें दस्यु जालिवालों के गोलभरा गाँव में पहुँचा देगा। यह काम हम इससे करायेंगे।" शिखिमुखी ने कहा।

"इस दुष्ट पर अब भी विश्वास करें? हमें गलत रास्ते पर ले जाकर उस शिथिलालय के पुजारी को सौंप देगा। इसलिए मेरा ख्याल है कि इसे साथ ले चलना उचित नहीं है।" विक्रम ने बताया।

"हमें डरने की कोई बात नहीं है। हमें यह संदेह हुआ कि वह हमें धोखा देनेवाला है, तो उसी क्षण मैं जांगला को तलवार से टुकड़े-टुकड़ों में काट दूँगा। हमारी मुसीबत यह है कि इस घने जंगल और नदी की घाटियों में इसे छोड़ दूसरा कोई रास्ता दिखानेवाला नहीं है। इसलिए हमें इसी की मदद लेनी होगी।" शिखिमुखी ने समझाया।

"जांगला से मदद लेने का काम तुम्हीं देख लो। इस पर जरा भी विश्वास करना खतरे को मोल लेना ही होगा।" विक्रमकेसरी ने साफ़ बता दिया।

"मेरी भी यही राय है।" शिखिमुखी ने विक्रम से कहा। फिर जांगला की ओर मुड़कर पूछा—"जांगला, सच बता दो। तुम धन को ज्यादा चाहते हो या जान को? साफ़-साफ़ बतला दो।"

जांगला पल-भर सोचता रहा, तब संभलकर धीरे से बोला—"साहब, मैं दोनों को बराबर चाहता हूँ। एक नहीं तो दूसरा बेकार है।"

"तुम बड़े ही नमकहराम हो! फिर भी न मालूम क्यों, असावधानी से सच बताते मालूम होते हो! इस क्षण से तुम्हारी जान मेरी मुट्ठी में है। तुम किसी प्रकार धोखा दिये बिना हमें गोलभरा पहुँचा दो, इसके बाद तुमको मैं आज़ाद कर दूंगा। थोड़ा धन भी दूंगा, समझे।" शिखी ने समझाया।

"जी हाँ, साहब! कामाख्यापुर में बहुत-सा धन देने का लोभ देकर पुजारी ने मुझे गलत रास्ते पर चलने को लाचार किया। इस पल से मैं ईमानदारी के साथ काम करूंगा। मुझ पर यकीन कीजिये। अब मैं आपको धोखा नहीं दूंगा।" जांगला ने हाथ जोड़कर बिनती की।

शिखिमुखी ने सर हिलाकर जांगला को आगे चलने का आदेश दिया। तब विक्रमकेसरी के साथ रात के बसेरेवाले पेड़ के पास पहुँचा। वहाँ पर अजित और वीरभद्र लाल कुत्ते के साथ खेल रहे थे। शिखिमुखी को देखते ही लालकुत्ता पूँछ हिलाते छलांग मारते उसके पास दौड़ आया।

शिखिमुखी ने लाल कुत्ते का सर सहलाते कहा–"नशीली दवा से अभी होश में आये हो! देखो, इसी ने तुमको दवा खिलायी है। इस पर निगरानी रखे रहो। अगर यह भागने की कोशिश करेगा तो हमें खबर देने की ज़रूरत नहीं। इसका गला काटकर खून पी डालो।" जांगला की ओर उंगली दिखाते शिखी ये शब्द बोला।

लाल कुत्ता भूँक उठा। जांगला का चेहरा सफ़ेद पड़ गया–"इस पल से मैं आपका ईमानदार सेवक हूँ, सरकार। मेरी जान बचाइये। आपके पैरों पड़ता हूँ।" जांगला बोला।

"यह बात तुम्हें आगे साबित करनी होगी। फिलहाल तुम्हारे हाथ रस्से से
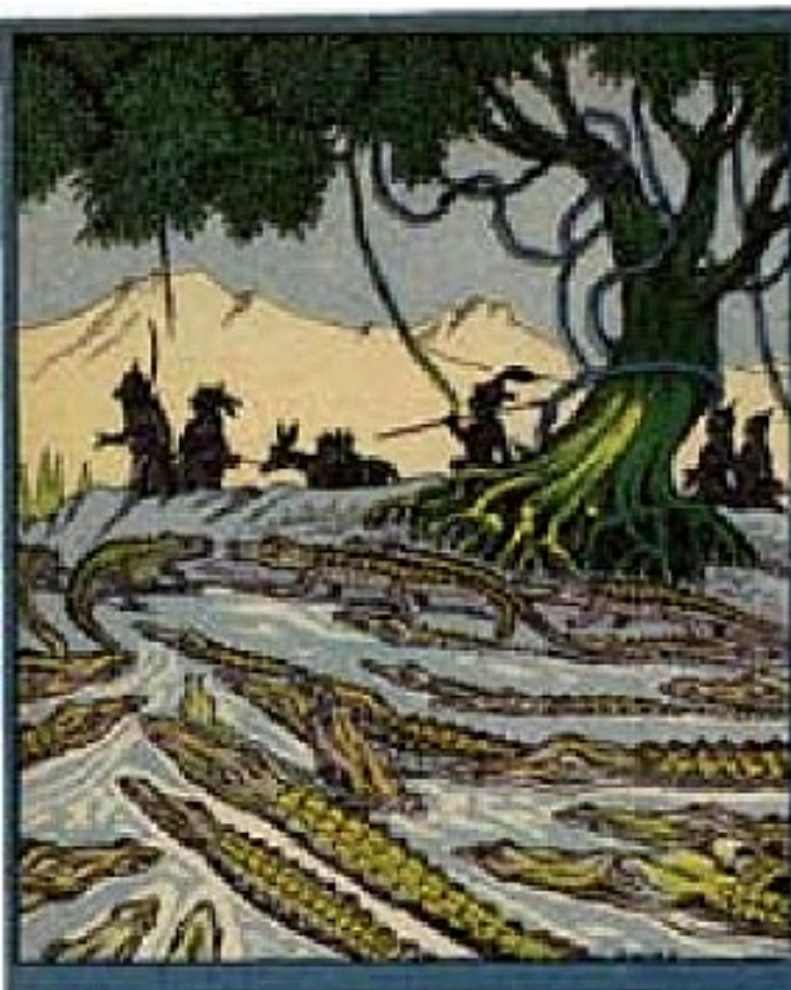
बांधकर खच्चर से उस रस्से को बांध देता हूँ, ताकि तुम भाग न जाओ।" शिखी ने कहा।

इसके बाद सब ने मिलकर अपने सामानों को दो खच्चरों पर लादकर बांध दिया। अजित ने जांगला के हाथों को पीछे की ओर खींचकर रस्से में गांठ लगायी। तब उस रस्से को खच्चर के गले में बांध दिया। शिखिमुखी का आदेश पाकर जांगला आगे चलते रास्ता दिखाने लगा।

दुपहर तक वे जंगल में चलकर एक घाटी में बहनेवाली नदी के निकट पहुँचे। वह शायद हिमालय से बहनेवाली बड़ी नदी की कोई उपनदी होगी। नदी में जहाँ-तहाँ ऊँचे टीले थे। उन पर तथा नदी के किनारों पर सैकड़ों की संख्या में मगर-मच्छ दिखाई दे रहे थे।

शिखिमुखी ने इन मगर-मच्छों की तरफ विचित्र ढंग से देखते हुए कहा—"विक्रम, हमें संभवतः इस नदी को पार करना होगा। नदी की धारा तेज है, लेकिन इसकी चौड़ाई एक सौ गज से ज्यादा न होगी। फिर भी इन मगर-मच्छों से बचना बड़ी मुश्किल की बात है।"

"शिखी, मुझे लगता है कि जांगला हमें जान-बूझकर यहाँ ले आया है। मैं उससे पूछ लेता हूँ कि गोलभरा पहुँचने के लिए हमें इस नदी को पार करना जरूरी है या नहीं।" विक्रम ने कहा।

आगे चलनेवाले जांगला के निकट पहुँचकर विक्रम ने पूछा—"जांगला, हमें इन मगर-मच्छोंवाली नदी के पास क्यों ले आये? गोलभरा यहाँ से कितनी दूर है?"

जांगला ने हाँफते हुए कहा—"इस नदी के किनारे से होते हुए चार-पांच कोस चलकर एक पहाड़ी को पार करना होगा, वहाँ से पीछे लौटकर एक कोस चलने पर

हम गोलभरा पहुँच सकते हैं। ऐसा न होकर अगर हम इस नदी को यहीं पार करें तो गोलभरा लगभग दो कोस की दूरी पर पड़ेगा।"

"तुम्हारा हिसाब कुछ गड़बड़ मालूम होता है, अरे भाई, नदी में इतने मगर-मच्छ हैं। जान का ख़तरा है, कैसे इसे पार करें?" विक्रम ने पूछा।

"पेड़ों की डालें काटकर नाव बनाकर हम इस नदी को पार कर सकते हैं, सरकार।" जांगला ने उपाय बताया।

इतने में शिखिमुखी वहाँ आ पहुँचा। विक्रम ने जांगला की बतायी हुई बातें सुनाकर उसका विचार पूछा।

"यह बात सोचने की है। पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि जांगला हमें गोलभरा गाँव पहुँचा रहा है या पूजारी के जाल में फँसाने जा रहा है? पहले हम खाना बनाकर खा लेंगे तब सोचेंगे कि हमें क्या करना है?" शिखी ने बताया।

खच्चरों पर से सामान उतारकर अजित और वीरभद्र ने रसोई का काम शुरू किया। शिखिमुखी ने जांगला के बंधन खोलकर उसे सावधान किया कि भागने की कोशिश करोगे तो मार डाले जाओगे।

इस बीच विक्रम ने एक ऊँचे पेड़ पर चढ़कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। उसे नदी के उस पार क़रीब दो-तीन कोसों की दूरी पर, एक पहाड़ी तलहटी से धुआँ उठते दिखाई पड़ा।

विक्रमकेसरी पेड़ से उतर आया। शिखी को यह समाचार सुनाकर बोला—"शायद वहाँ पर कोई गाँव है। वह गोलभरा ही हो सकता है।"

"हो सकता है! खाने के बाद जांगला को पेड़ पर चढ़ाकर उससे जान लेंगे कि वह धुआँ कहाँ से आ रहा है? लगता है कि शिवालय का पूजारी भी हमारे

रास्ते का इंतज़ार करते यहीं-कहीं छिपा मालूम होता है। हमें बड़े ही चौकन्ने रहना चाहिए।" शिखिमुखी ने बताया।

इसके बाद सब ने पेड़ों की छाया में बैठकर खाना खाया। नदी से पानी लाने अजित और वीरभद्र चले गये। उन्हें मगर-मच्छों को डरा-धमकाकर बर्तन भरने पड़े। उनके नदी में पैर रखते ही मगर-मच्छ दल बांधकर उन पर हमला कर बैठे।

"विक्रम साहब! इस नदी को पार करने का प्रयत्न करना खतरनाक है। नदी के किनारे चलकर जांगला के कहे मुताबिक पहाड़ों को पार करके गोलभरा पहुंचना ज्यादा अच्छा होगा।" अजित ने कहा।

"मैं भी यही सोचता हूं, लेकिन इस दगेबाज की बातों में कितनी सचाई है, हमें जान लेनी है।" विक्रम केसरी ने कहा।

शिखिमुखी ने जांगला को निकट बुलाकर कहा—"तुम पास के एक ऊंचे पेड़ पर चढ़कर देखो कि चारों तरफ़ कहीं पुजारी का दल या कोई गांव तो नहीं है?"

जांगला भालू की तरह झटपट एक पेड़ पर चढ़ बैठा। चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर मुस्कुरा पड़ा, तब नीचे उतर आया। उसका मुस्कुराना शिखिमुखी वगैरह ने न देखा।

जांगला शिखिमुखी के पास आकर बोला—"साहब! दूर पर पहाड़ों में गोलभरा गांव थोड़ा-सा दिखाई दे रहा है। गांव के चारों तरफ़ जंगल फैला है, इसलिए नये लोगों को उसे पहचानना थोड़ा मुश्किल है। क्या हम यात्रा शुरू करें?" जांगला ने पूछा।

"अभी नहीं, धूप के कम होने पर। तुम्हारे दोस्त या पुजारी का दल उस पार कहीं दिखाई तो नहीं पड़ा?" शिखिमुखी ने पूछा।

यह सवाल सुनते ही जांगला का चेहरा पीला पड़ गया और वह कांपते हुये बोला–"सरकार, क्या मुझ पर अब भी यकीन नहीं है? वे बदमाश मुझे दिखाई दें तो मैं उन्हें जान से न छोडूँगा।"

"यह बात तो साबित होने की है। लेकिन अगर तुम धोखा देने की हिम्मत करोगे तो मैं भी तुम को जान से नहीं छोडूंगा। याद रखो!" सिंहमुखी ने धमकी दी।

जांगला ने दोनों हाथ उठाकर सिंहमुखी को नमस्कार किया और कुछ कहने ही वाला था कि खच्चरों में से एक नदी के किनारे की झाड़ियों में रेंगते हुए भागने लगा। सिंहमुखी के अजित और वीरभद्र को आदेश देने के पहले कि उसे लौटा लाओ, जांगला एक लाठी लेकर 'हे हे हे' चिल्लाते खच्चर की ओर बिजली की भांति दौड़ पड़ा।

विक्रमकेसरी ने तुरंत धनुष-बाण लेकर जांगला की ओर निशाना लगाया। अगर वह जंगल के बीच भागने को तैयार हो जाय तो उस पर बाण चलाने को विक्रम तैयार हो गया। इस बीच अजित और वीरभद्र भी अपने हाथों में तलवार लिये उसी ओर दौड़ पड़े।

जांगला दौड़ते-दौड़ते नदी के किनारे की झाड़ियों के पास पहुँचते ही हठात् रुक गया। झाड़ी में से एक चीता गरज उठा। वह उसी वक्त एक हिरण को मारकर खा रहा था। आगे-आगे मच्छरों ने तथा पीछे जांगला ने वहाँ पहुँचकर उसे खूब भड़काया।

चीते ने झाड़ी में से सर बाहर निकाला। झाड़ी से एक गज की दूरी पर जांगला भयकंपित हो पीछे न लौटने की हालत में खड़ा रह गया। पल भर चीता और जांगला एक दूसरे की आँखों में देखते अड़चल खड़े रह गये। इतने में उसने ज़ोर से चीते पर लाठी का प्रहार किया। परन्तु चीते की ताकत के सामने उसकी ताकत बेकार साबित हुई।

चीता जांगला का गला दबोचना चाहता था। जांगला उसकी गर्दन पर मुट्ठी खींचकर आघात करने लगा। चीते ने जांगला की कमर को अपने पैरों से कसकर झकझोर दिया। दोनों एक दूसरे को कसकर पकड़े हुए थे, इसलिए उस धक्के से दोनों नीचे गिरकर नदी की ओर लुढ़कते पानी में जा गिरे।

पानी में भी एक दूसरे को पकड़े लड़ते रहे। उन दोनों को पानी में गिरते ही कई मगर-मच्छों ने आकर घेर लिया। शिखिमुखी इस दृश्य को देख चकित रह गया। विक्रमकेसरी जांगला को बचाने के ख्याल से मगर-मच्छों पर तेजी से बाण पर बाण छोड़ने लगा।

आपस में लड़ते नदी की धारा में बहनेवाले चीते और जांगला की ओर नदी के दूसरे किनारे से बाणों की वर्षा होने लगी। वहाँ पर कोई छिपे रहकर जांगला को बचाते निशाने साधकर चीते पर ही बाण छोड़ रहे थे।

(और है)

भाई के हत्यारे

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा—"राजन, तुम्हारी लगन अपूर्व है, लेकिन किसी भी हालत में तुम अन्याय न करोगे तो तुम्हें सफलता मिलेगी। एक छोटा-सा अन्याय भी कैसे सर्वनाश का कारण बन जाता है, तुम्हें बताने के लिए मैं निषध के राजा धुमसेन की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए तुम सुनो।"

बेताल यों कहने लगा:

निषध देश के राजा धुमसेन के चित्रसेन, विचित्रसेन तथा महसेन नामक तीन पुत्र थे। उनमें चित्रसेन व विचित्रसेन बड़े ही दुष्ट और दुराचारी थे, इसलिए राजा बहुत ही चिंतित थे। मगर महसेन

वेताल कथाएँ

इसलिए द्युमत्सेन ने अपने राज्य के तीन भाग करके तीनों पुत्रों में बांट दिया और सबको अपने अपने राज्य का अलग रूप से शासन करने का प्रबंध किया। परन्तु राज्य का यह बँटवारा ठीक से नहीं हुआ। राजा ने अपने बड़े पुत्रों को जंगल व पहाड़ी प्रदेश बांटकर दिये और राजधानी माहिष्मतीपुर तथा उसके चारों तरफ़ के संपन्न प्रदेश तीसरे पुत्र को दिये। इस भूभाग के लिए महत्सेन को राजा बनाकर शासन कार्य में द्युमत्सेन उसकी मदद करने लगा।

समस्त लक्षणों से पूर्ण था। सब तरह से वही राज्य के लिए योग्य था। इसलिए राजा द्युमत्सेन तीसरे पुत्र को ही अधिक चाहता था।

राजा सोचने लगा—उसके शासन करते हुए प्राण छोड़ दे तो नियमानुसार ज्येष्ठपुत्र चित्रसेन गद्दी का हकदार होगा। बड़े बेटे दोनों छोटे पुत्र महत्सेन की किसी प्रकार की मदद न करेंगे और न न्याय ही। इसलिए उसके जीवित रहते अपने तीसरे पुत्र को गद्दी पर बिठा दे तो उसका विरोध करने का अधिकार किसी को न होगा। परंतु लोग इसे बुरा मान सकते हैं।

चित्रसेन और विचित्रसेन यह सोचकर कि उनके प्रति अन्याय हुआ है, वे महत्सेन के भूभाग को हड़पने के सभी प्रकार के प्रयत्न करने लगे।

जब महत्सेन को यह समाचार मिला कि उसके बड़े भाई उसका अंत करने तथा उसके राज्य को हड़पने के प्रयत्न कर रहे हैं, वह बड़ा दुखी हुआ। उसने अपने भाइयों के पास यों समाचार भेजा—

"पिताजी ने राज्य का जो बँटवारा किया है, अगर वह आप लोगों को पसंद नहीं है तो फिर से उसका बंटवारा करने में मुझे कोई एतराज नहीं है। हम एक

ही माँ की संतान हैं, इसलिए हमारे बीच शांति और सद्भाव का होना जरूरी है। इसलिए समझौता करने आप लोग मुझे जहाँ बुलायेंगे, वहाँ पर बेहथियार मैं चला आऊँगा। आप लोग राज्य का चाहे जैसा भी बंटवारा करें, मैं स्वीकार करूँगा। मुझे आप लोग जहाँ तक हो सके, जल्द सूचित कीजिये कि हमारी मुलाकात कब और कहाँ होगी?"

महल्सेन का संदेश पाकर उसके बड़े भाई बहुत प्रसन्न हुए। यह निर्णय हुआ कि अमुक दिन अमुक जगह तीनों भाइयों का समावेश होगा। यह समाचार मिलते ही महल्सेन घोड़े पर छोटे दल के साथ निश्चित प्रदेश के लिए रवाना हुआ।

जब वह रवाना होकर आ रहा था, तब रास्ते भर में लोगों ने उसके प्रति अपार श्रद्धा व भक्ति प्रदर्शित की। उसके भाइयों के राज्यों की जनता स्वयं कहने लगी—"राजा हो तो ऐसे हो! कैसा ठाठ! और कैसी शान है!" लोग प्रकट रूप में उसकी प्रशंसा करने लगे। जहाँ भी उसका पड़ाव पड़ता, वहाँ पहुँचकर लोग उसके साथ "महाराजा!" का संबोधन करते और उसका उपचार करते।

यह सब देख महसेन भी स्वयं दंग रह गया।

परंतु अपने छोटे भाई का यह आदर देख चित्रसेन और विचित्रसेन एक दम ईर्ष्या से जल उठे। अपने छोटे भाई के प्रति मन में जो कुछ सद्भावना थी, वह खाली रही। जब तीनों मिलकर राज्य के बंटवारे के बारे में चर्चा करने लगे तब बड़े भाइयों ने छोटे की निंदा की और उसे मार भी डाला।

यह खबर महसेन के परिवार ने माहिष्मती नगर को पहुँचा दी। राजा द्युमत्सेन दुःख के साथ क्रोध से भी आग बबूला हो उठा। उसने तत्काल ही सेना का उचित प्रबंध करके अपने दो बड़े पुत्रों पर आक्रमण किया।

चित्रसेन तथा विचित्रसेन ने सोचा कि यह आक्रमण उनकी भलाई के लिए ही हुआ है। क्योंकि उन लोगों ने अपने छोटे भाई को तो मार डाला, परंतु उसके राज्य को अधीन में लेने में बूढ़ा राजा रोड़ा बना हुआ था। लोगों की सहानुभूति स्वभावतः बूढ़े राजा के प्रति होगी। अब वृद्ध राजा ने ही युद्ध की घोषणा की है, इसलिए वे दोनों अब दुगुनी सेना के साथ अपने पिता को पराजित कर क्षत्रिय-धर्म के मुताबिक राज्य पर अधिकार कर सकते हैं। वृद्ध पिता किसी भी हालत में उनका सामना न कर सकेगा।

लेकिन जैसे उन दोनों भाइयों ने सोचा था, वैसे न हुआ। युद्ध में उनकी सेनाओं ने किसी भी प्रकार की वीरता न दिखायी। वृद्ध होने पर भी द्युमत्सेन ने शुरू से ही युद्ध भूमि पर अपनी धाक जमायी। आखिर चित्रसेन व विचित्रसेन मामूली योद्धाओं के हाथों में मारे गये।

इसके बाद राजा द्युमत्सेन ने माहिष्मती नगर में लौटकर महसेन के पांच वर्ष के

पुत्र को गद्दी पर बिठाया और उसकी तरफ़ से राज्य-शासन करने लगा। उस वृद्ध राजा की मृत्यु के बाद उसका पोता सारे निषध राज्य का राजा बना।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन्, द्युमत्सेन के तीनों पुत्रों की मौत का कारण कौन है? चित्रसेन और विचित्रसेन के साथ वास्तव में बड़ा अन्याय हुआ है, यह सत्य है न? वे दोनों युद्ध में क्यों हार गये? इन प्रश्नों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने जवाब दिया– "राजा द्युमत्सेन ने अपने बड़े पुत्रों के साथ किसी प्रकार का अन्याय न किया। यह जानकर भी उन्हें राज्य दिया कि वे शासन करने योग्य नहीं हैं। उन दोनों ने भी यह साबित किया कि वे राज्य करने योग्य नहीं हैं। अपने छोटे भाई का जब जनता ने महाराजा के रूप में आदर किया, तब उन्हें अपनी नाकाबिलियत को समझ लेना चाहिए था। उन्होंने ऐसा न मानकर ईर्ष्यावश अपने भाई को मार डाला और जनता की दृष्टि में वे गिर गये। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि उनके पिता जब तक जीवित रहेंगे तब तक उनकी सेनाओं के लिए वे ही महाराजा हैं। इस सत्य को स्वीकार किये बिना अपने पिता के साथ उन दोनों ने युद्ध किया। महाराजा के प्रति विद्रोह करनेवाले भी उस महाराजा की जनता की दृष्टि में राजद्रोही होते हैं। इसी लिए उनकी सेनाओं ने ठीक से युद्ध न किया। उनका साधारण सैनिकों के हाथों में मरने का कारण भी यही है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

तीन चीज़ें!

स्वर्णनगर राज्य पर पूर्णचन्द्र छोटी उम्र में ही गद्दी पर बैठा। उसके माता, पत्नी और अविवाहिता बहन थी। वह तीनों से बराबर प्यार करता था।

एक दिन उस राजा के पास एक योगी आया। उसने एक गोली, एक माला और एक फूल देकर कहा—"इन्हें तुम उन व्यक्तियों को दो जिन से तुम प्रेम करते हो! यह गोली जो खायगा, उसे कोई चिंता न होगी। वे सदा कुशल रहेंगे। इस माला को जो धारण करेगी, उसके द्वारा हमेशा तुम्हारा भला होगा। यह फूल जो अपनी वेणी में गूँथेगी, उसका सौंदर्य दुगुना बढ़ जायगा।" ये बातें कहकर योगी चला गया।

राजा के प्रिय व्यक्ति तीन हैं। साथ ही उपहार भी तीन हैं। उनमें एक भी उसके लिए नहीं है। उसकी समझ में न आया कि किस चीज़ को किसे देना है! उसे यह चिंता भी होने लगी कि योगी ने उसके लिए कोई भी चीज़ नहीं दी है।

सोचते-सोचते उसे यह बात सूझी। वह यह कि योगी ने खासकर उसके लिए भले ही कोई चीज़ दी न हो, पर तीनों चीज़ें उसकी भलाई के लिए ही दी हैं। इसकी याद आते ही उसने गोली अपनी माता को, माला पत्नी को तथा फूल अपनी बहिन को दिया। उसकी माँ विधवा है, वह बिना चिंता के कुशल रहेगी तो उसकी ज़िम्मेदारी का भार कम होगा। उसकी पत्नी के ज़रिये ज़िंदगी भर उसका भला ही होता रहा तो उसका दांपत्य जीवन सुखपूर्वक बीत जायगा। उसकी बहन का सौंदर्य दुगुना हो जायगा तो उसे योग्य पति प्राप्त होगा। यह सोचकर राजा ने तीनों चीज़ों को इस प्रकार उन्हें दिये।

देशाटन

पुराने जमाने में फ़ारस के एक गाँव में एक गरीब आदमी था। उसका बेटा बड़ा अच्छा पहलवान था, गरीबी से तंग आकर पहलवान ने सोचा कि देशाटन करके धन कमाना चाहिये। उसने अपने पिता से अनुमति माँगी। पिता ने पुत्र पर रहम खाकर कहा—"बेटा, शारीरिक बल से भी क़िस्मत बड़ी होती है। जो कुछ है, उसीसे संतुष्ट हो जाओ।"

पुत्र ने कहा—"पिताजी, देशाटन से कई तरह के फ़ायदे होते हैं। दुनिया के विचित्रों को देख सकते हैं। नये लोगों से मैत्री कर सकते हैं। धन कमा सकते हैं और दुनियादारी का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।"

"बेटा, देशाटन से व्यापारी, पंडित, गायक, और शारीरिक मेहनत करनेवाले ही फ़ायदा उठा सकते हैं। तुम्हारे जैसे लोगों को कोई लाभ न होगा। पराये देशों में तुम्हारे बारे में सोचनेवाला व्यक्ति भी कोई न होगा। इसलिए तुम अपना विचार बदल लो।" पिता ने समझाया।

"आग में जलने पर ही अगर बत्ती का गुण मालूम हो सकता है। मैं मस्त हाथी और सिंह का सामना करने की ताक़त रखता हूँ। मैं अपनी क़िस्मत को खुद ढूंढने की कोशिश करूँगा।" लड़के ने निवेदन किया। पिता ने पुत्र को आशीर्वाद देकर देशाटन पर भेज दिया।

पहलवान पैदल चलकर कुछ दिन बाद समुद्र के किनारे पहुँचा। वहाँ पर एक नाव यात्रा के लिए तैयार खड़ी थी। पहलवान के पास एक पाई भी न थी। उसने नाविक से प्रार्थना की कि उसे नाव पर सवार कराये।

राजीव सक्सेना

"देखने में बैल जैसे हो। बिना शुल्क दिये नाव पर चढ़ने की अनुमति माँगते तुमको लज्जा न हुई?" नाविक ने पहलवान को गालियाँ दी और कहा—"बिना किराया दिये तुमको मैं नाव पर सवार होने न दूंगा।"

पहलवान गुस्से से लाल हो उठा। नाव घाट से रवाना हो गयी। तब पहलवान ने हाथ उठाकर चिल्लाते हुए कहा—"मैं किराये के बदले अपना कुर्ता दूंगा।"

कुर्ते के लोभ में पड़कर नाविक ने नाव को किनारे पर लगा दिया। नाविक को किनारे पर उतरते ही पहलवान ने उसकी गर्दन पकड़कर एक मुक्का दे मारा। दूसरे नाविक जब नाविक की मदद करने आया तब पहलवान ने उसे भी मार गिराया।

पहले नाविक ने सोचा कि पहलवान से दुश्मनी मोल लेना ठीक नहीं है। इसलिए उससे माफ़ी माँगी और बिना किराया लिये उसे नाव पर चढ़ा लिया। नाव रवाना हो गयी। थोड़ी दूर चलने पर समुद्र के बीच में एक स्तम्भ दिखायी दिया। नाविक ने नाव को स्तम्भ के पास ले जाकर कहा—"हम लोग खतरे में फँस गये हैं। आगे थोड़ी दूर पर एक भँवर है। कोई ताकतवर आदमी तैरते जाकर एक रस्से से नाव को उस स्तम्भ से बांध देगा तो हम बच जायेंगे। वरना यह नाव उस भँवर में डूब जायगी।"

पहलवान एक रस्सा लेकर तैरते हुए स्तम्भ के पास गया। नाविक रस्से को खींचकर नाव चलाते उसे दूर ले गया। वह पहलवान बीच समुद्र में खंभे पर रह गया। पहलवान यह समझ न पाया कि एक बार किसी आदमी का अपमान करें और बाद को उसे हजार बार भी खुश करने पर वह बदला लेने के विचार को भूल नहीं सकता।

दो दिन तक पहलवान खंभे पर ही इस विचार से इंतज़ार करता रहा कि शायद कोई दूसरी नाव उस रास्ते से आ गुज़रे। लेकिन उधर कोई भी नाव न आयी। उसके हाथ खंभे से छूट गये और वह पानी में गिर पड़ा। दिन भर तैरकर वह किनारे आ पहुँचा।

पहलवान को भूख सताने लगी। पास में ही उसे एक बगीचा दिखायी पड़ा। उसमें जाकर पत्ते-फल व कंद खाये, तब जाकर उसकी भूख मिट गयी। लेकिन उसे बड़ी प्यास लग गयी। चलने की थोड़ी ताकत आयी। थोड़ी दूर चलने पर एक काफ़िला नज़र आया। वहीं पर एक कुआँ भी दिखायी दिया। उस कुएँ का मालिक यात्रियों से पैसे लेकर पानी पिला रहा था। वह एक दम मोटा व नाटा था।

पहलवान ने जाकर उससे पानी माँगा। नाटे ने पानी देने से इनकार किया। पहलवान की जीभ प्यास के मारे सूख गयी थी। उसके मुँह से बात तक नहीं निकल रही थी। उसने नाटे को उठाकर दूर फेंक दिया और एक घड़े भर का पानी पी डाला, तब उसकी जान में जान आ गयी। नाटे और यात्री भी उस पर टूट पड़े, लेकिन पहलवान उनसे बचकर रेगिस्तान की ओर भाग गया।

पहलवान चलता गया। अंधेरा हो चला। कहीं लोगों के निशान दिखाई न दे रहे थे। उस अंधेरे में ही उसे आखिर दूर पर रोशनी दिखाई दी। वह व्यापारियों का एक काफ़िला था। पहलवान उस काफ़िले से आ मिला।

व्यापारी सब चोरों के डर से जान हथेली में लेकर चल रहे थे। यह बात जानकर पहलवान ने उन लोगों से कहा— "तुम लोग डरो मत। मैं अकेले ही पचास लोगों को पछाड़ सकता हूँ। मेरे

रहते कोई भी तुम्हारा बाल तक नहीं बांक सकता।"

पहलवान की बातों पर प्रसन्न होकर यात्रियों ने उसे खाना-पानी दिया। पहलवान ने भर पेट खा लिया और खुर्राटे लेते सोने लगा।

तब व्यापारियों में से एक ने अन्य लोगों से कहा–"भाइयो, मुझे चोरों के डर से इस मोटे आदमी का भय ही ज्यादा सता रहा है। हमें क्या पता कि यह आदमी चोर नहीं है। सच्ची बात भगवान ही जाने। मेरा विचार है कि इसको यहीं पर छोड़कर हम लोग चुपचाप चले जावें।" उसकी बात सुनने पर पहलवान पर और यात्रियों को भी संदेह हुआ। वे सब उसे वहीं छोड़कर चल दिये।

पहलवान जब जाग पड़ा, तब सवेरा होने को था। व्यापारियों का काफ़िला वहाँ पर न था। तब उसने मन में सोचा–"पिताजी ने जो बात कही, वह सच निकली।" उसी समय थोड़ी दूर पर तलवारों की झनझनाहट उसे सुनाई दी। पहलवान उस दिशा में गया। वहाँ पहुँचकर देखता क्या है कि एक सुंदर युवक के साथ कई डाकू लड़ रहे हैं। पहलवान भी डाकुओं पर टूट पड़ा। उन दोनों को साथ लड़ते देख डाकू भाग खड़े हुए।

सुंदर युवक ने पहलवान से कहा–"भाई, मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो? समय पर अगर तुम यहाँ न पहुँचते तो आज मेरी जान चली जाती। मैं इस देश का युवराज हूँ। तुमने मेरी जो मदद की, इसके बदले में चाहता हूँ कि तुम मेरा आतिथ्य स्वीकार करो।"

पहलवान ने युवराज को अपनी सारी कहानी सुनायी। युवराज ने पहलवान को कुछ समय तक अपने पास रखा और उसे अनेक उपहार देकर उसके घर भेज दिया।
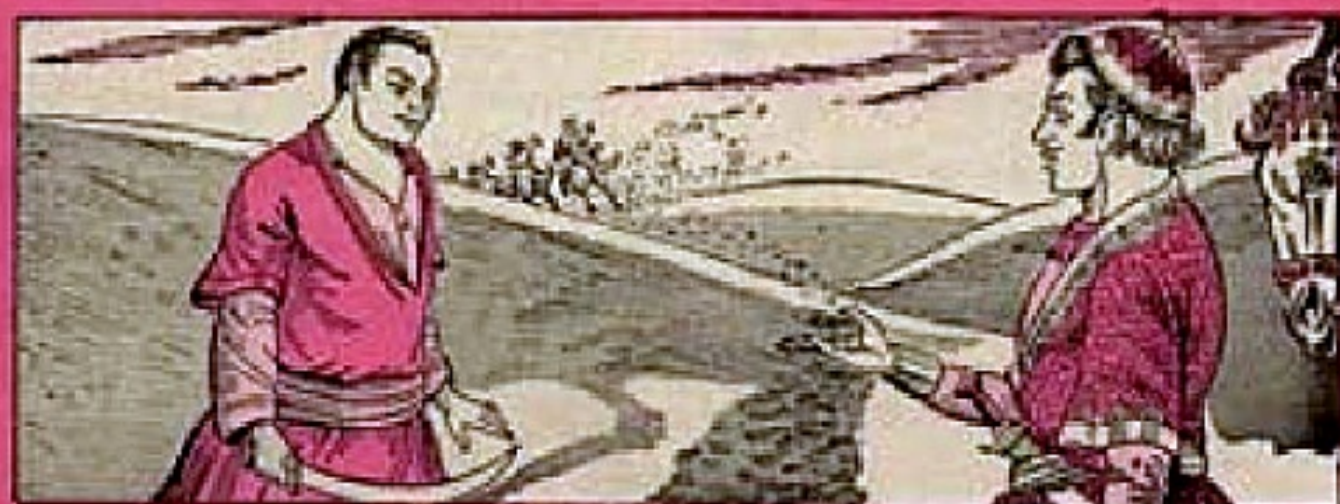
ज्योतिषी

फ़ारस में एक गरीब आदमी था। वह गली-कूचे घूमकर छोटी-मोटी चीज़ें बेचता, जो कुछ मिलता, उससे अपनी ज़िंदगी काट लेता था।

एक दिन उस गरीब की औरत नहाने के लिए एक सार्वजनिक स्नानागार में गयी। उसी समय वहाँ पर एक दूसरी औरत आयी। उसने स्नानागार के कर्मचारी को आदेश दिया कि वह तुरंत स्नान करना चाहती है, इसलिए स्नानागार खाली करा दे। उसने बाकी सभी औरतों को बाहर जाने को कहा।

उस आदेश को सुनकर गरीब व्यक्ति की औरत को क्रोध आया। उसने उस कर्मचारी से पूछा—"यह महारानी कौन है? जिसके वास्ते तुम सब को बाहर भगा रहे हो?"

स्नानागार के कर्मचारी ने कहा—"उनको तुम क्या समझती हो? राजा के प्रधान ज्योतिषी की पत्नी हैं।"

गरीब की औरत खीझकर घर लौट आयी और अपने पति से बोली—"तुम किसी काम के नहीं हो। कम से कम ज्योतिषी तो बन जाते? लोगों के बीच मेरी भी इज़्ज़त होती?"

"मैं जन्म-पत्री नहीं बना सकता। ग्रहों का ज्ञान भी मुझे नहीं है। मैं कैसे ज्योतिषी बन सकता हूँ?" गरीब ने अपनी पत्नी से कहा।

"यह सब मैं नहीं जानती। अगर तुम ज्योतिषी न बनोगे तो मैं तलाक देकर अपने रास्ते चली जाऊँगी!" गरीब की पत्नी ने कहा। गरीब लाचार होकर पंचांग का एक बण्डल तथा पांसे लेकर

(फ़ारस की लोक-कथा)

स्नानागार के सामने ज्योतिष बताने बैठ गया ।

ठीक उसी समय स्नानागार में राजकुमारी स्नान कर रही थी । उसने स्नान करने के पहले अपनी उंगली से हीरे की अंगूठी निकालकर दासी के हाथ में देते हुआ कहा था—"तुम इसे सावधानी से रखो । स्नान के होते ही मैं तुम से ले लूंगी ।"

दासी की समझ में नहीं आया कि अंगूठी को कहाँ रखे । आखिर उसने देखा कि संगमरमर के पत्थरों से बनी उस दीवार में एक छोटा-सा छेद है । उसमें अंगूठी रख दी और पहचान के लिए बालों का एक गुच्छा उस छेद में ठूंस दिया ।

राजकुमारी ने नहाकर दासी से पूछा—"मेरी अंगूठी दे दो!" दासी का चेहरा पीला पड़ गया । उसे बिलकुल यह बात याद न आयी कि उसने अंगूठी कहाँ पर छिपा रखी है ।

दासी को घबराये हुये देख राजकुमारी ने कहा—"इसी क्षण अगर तुम मेरी अंगूठी न दोगी तो तुम्हारी जान की खैर नहीं । खबरदार!"

दासी डर के मारे स्नानागार के बाहर दौड़ आयी । उसने सामने ज्योतिषी को बैठे देखा ।

"अजी, जरा बता दो कि राजकुमारी की अंगूठी कहाँ पर है? नहीं तो मेरी जान ले लेगी ।" दासी ने उस गरीब से पूछा ।

गरीब की समझ में न आया कि उसे क्या जवाब देना है । उसने एक बार दासी की ओर देखा । पँचांग उलटा, पाँसे डालकर ध्यान से देखा ।

दासी ने अपने सर पर जो आँचल डाल रखा था, उसमें एक छेद था । उस छेद में

से केश बाहर झांक रहे थे। उसे देख गरीब ने कहा—"बेटी! मेरी आँखों के सामने एक छोटा-सा छेद दीखता है। उसमें केश दिखाई देते हैं।"

तुरंत दासी को अंगूठी छिपाने की जगह याद आयी। वह जल्दी-जल्दी स्नानागार में दौड़ गयी। अंगूठी निकालकर राजकुमारी को देते हुये बोली—"बाहर जो ज्योतिषी बैठा है, उसने आज मेरी इज्जत बचा ली है।"

राजकुमारी को दासी की बातों पर आश्चर्य हुआ। उसने घर जाकर सारी बातें अपने पिता को बतायीं।

राजा ने उस नये ज्योतिषी को बुला भेजा, उसे शाल ओढ़ा कर अपने दरबार में नौकरी दी।

लेकिन बहुत जल्द ही ज्योतिषी की कड़ी परीक्षा की घटना हुई। चोरों ने खजाने में चोरी की। कई कीमती चीजें चुराई गयीं। राजा ने नये ज्योतिषी को आदेश दिया कि वह चोरों का पता बता दे।

ज्योतिषी एक दम परेशान हो उठा। उसने राजा से चालीस दिन की मोहलत मांगी। राजा ने मान लिया।

ज्योतिषी ने घर लौटकर अपनी पत्नी से कहा—"सारी कहानी समाप्त हो गयी।

राजा के खजाने को लूटनेवाले दल में भी ठीक चालीस ही लोग थे। उन्हें मालूम हो गया कि उन्हें पकड़वाने के लिए ज्योतिषी नियुक्त हुआ है। उस दिन शाम को अंधेरा फैलते ही चोरों ने अपने दल के एक आदमी को ज्योतिषी के घर भेजकर भीतर की बातचीत सुनकर आने का आदेश दिया।

चोर आड़ में छिपकर सुन रहा था। ज्योतिषी की पत्नी ने बर्तन लाकर अपने पति के हाथ में एक खजूर देते हुए कहा—"एक!"

"अब बच रहे उन चालीस।" ज्योतिषी ने कहा।

चोर घबरा गया। अपने साथियों के पास जाकर बोला—"ज्योतिषी ने हमारे रहस्य का पता लगा लिया है। मैं आड़ में छिपा हुआ था तब भी उसने मेरा पता लगाया और कहा—"एक, अब बच रहे उन चालीस।"

उसकी बात पर बाक़ी लोगों ने यक़ीन नहीं किया। दूसरे दिन *संध्या के समय* दूसरे चोर को ज्योतिषी के घर भेजा। भीतर ज्योतिषी कह रहा था—"दो! अब अड़तीस हैं!"

तुमने मुझे ज्योतिषी बनने को तंग किया। राजा के खजाने में चोरी हो गयी है। चोरों का पता लगाने के लिए मैंने चालीस दिन की मीयाद मांगी। मीयाद के पूरा होने के दिन हमारे भागने के सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है।"

चालीस दिनों का हिसाब जानने के लिए ज्योतिषी की पत्नी ने चालीस खजूरों को गिनकर एक बर्तन में डाल दिया और कहा—"मैं हर दिन शाम को तुमको खाने के लिए एक खजूर दिया करूंगी। जिस दिन बर्तन खाली होगा, उस दिन की रात को हम यहां से भाग जायेंगे।"

इस तरह उन चालीस दिन तक उन चालीस चोरों ने हिसाब सुना। उन्हें अब बिलकुल संदेह न रहा। उन लोगों ने सोचा कि ज्योतिषी को उनके रहस्यों का पता लग गया है।

चालीसवें दिन चोरों का सरदार ही आकर ताक में बैठा था।

घर के भीतर ज्योतिषी की पत्नी खाखिरी खजूर देते हुए बोली—"यही खाखिरी है। देखते हो न? यह सब से बड़ा है!"

चोरों के सरदार के पैर ठण्डे पड़ गये। वह झट घर के अन्दर आया, ज्योतिषी के पैरों पर गिरकर विलाप कर उठा—"हुजूर! हमको राजा के हाथ न पकड़वाइयेगा! हमने जो कुछ लूटा है, सब धन वापस दे देंगे। आपको पुरस्कार भी देंगे। हमारा रहस्य राजा को न बताइयेगा। हमारे सर कटवा देंगे।"

"अच्छा, ऐसा ही हो!" ज्योतिषी ने कहा।

उसी रात को चोरों ने वह सब माल लाकर ज्योतिषी को सौंपा जिसे उन लोगों ने खजाने से लूटा था। इसके साथ बहुत से रुपये भी ज्योतिषी को दिये।

ज्योतिषी को ऐसा लगा कि मानों उसकी जान में जान आ गयी हो। उसने दूसरे दिन ही राजा को सारा धन सौंप दिया। अपने दरबारी ज्योतिषी की प्रतिभा पर चकित हो राजा ने उसका बड़ा सत्कार किया।

राजा ज्यों ज्यों ज्योतिषी से प्रभावित हो उसका सत्कार करने लगा, त्यों त्यों वह भी व्यग्र होने लगा। इस तरह कितने दिन चलेंगे? कभी न कभी वह पकड़ा जायगा। उस दिन राजा उसका सर कटवा देगा। आज तक किस्मत ने उसका साथ दिया, पर भाग्य की देवी भी चंचल होती है।

इस आफ़त से बचने का उपाय सोचते ज्योतिषी स्नान कर रहा था कि उसे एक उपाय सूझा। वह पागल बन जाने का अभिनय करे तो राजा उसे दरबार से निकाल देगा। इसके बाद उसे जान का खतरा न होगा।

इस विचार के आते ही ज्योतिषी गीले कपड़ों से ही राज-भवन में दौड़ गया। सीधे वह राजा की आंतरिक सभा में पहुँचा, राजा को गद्दी पर से उठाकर बाहर दौड़ पड़ा।

उसके दूसरे ही क्षण ऊपर की शहतीर टूटकर गद्दी पर गिर पड़ी। सिंहासन टूटकर चूर चूर हो गया।

अपने दरबारी ज्योतिषी के इस व्यवहार पर राजा क्रोधित हो रहा था कि इस घटना को देखकर वह बोला—"वाह, तुम साधारण ज्योतिषी नहीं हो? त्रिकाल ज्ञाता हो! मुझ पर होनेवाले खतरे को पहले ही जानकर स्नान करना छोड़ तुम दौड़े-दौड़े आये हो! तुम जैसे मददगार और कौन हो सकते हैं? मैं तुम्हारा ऋण कैसे चुका सकूँगा?"

राजा के साथ गुप्त मंत्रणा करनेवाले दोनों मंत्री ज्योतिषी के पैरों पर गिर पड़े।

राजा ने ज्योतिषी का बड़ा सम्मान किया। असंख्य पुरस्कार देकर पुराने प्रधान ज्योतिषी को हटाया और उसकी जगह इस ज्योतिषी को नियुक्त किया।

दूसरे दिन नये प्रधान ज्योतिषी की पत्नी स्नानागार में स्नान करने गयी। वहाँ पर पुराने प्रधान ज्योतिषी की पत्नी स्नान कर रही थी।

नये प्रधान ज्योतिषी की पत्नी ने स्नानागार के कर्मचारी से कहा—"उस औरत को भेज दो। मुझे स्नान करना है।"

"जी हाँ! जैसी आप की आज्ञा!" स्नानागार के कर्मचारी ने कहा।

पौराणिक चन्द्रमा

इसे 'चन्दामामा' का वर्ष ही कहना होगा। क्यों कि इसी वर्ष पृथ्वी और चन्द्रलोक के बीच आवागमन शुरू हो गया है। भविष्य में ये आवागमन और ज्यादा होंगे। लेकिन चन्द्रमा अनादि काल से ही पुराण-प्रसिद्ध है। इस दीपावाली के पर्व पर हम पौराणिक चन्द्रमा की कुछ कथाओं का स्मरण करेंगे।

पौराणिक चन्द्रमा का जन्म कैसे हुआ? इस संबंध में कुछ गाथाएं प्रसिद्ध हैं।

ब्रह्मा ने एक बार अत्रि को आदेश दिया कि वह सृष्टि करे। अत्रि ने जब तपस्या की तब उसके नेत्र से एक तेज निकला और वह दस-दिशाओं में फैल गया। कहा जाता है कि वे दस-दिशाएं उस तेज को सहन न कर सकीं और उस तेज को समुद्र में गिरा दिया। उस तेज को ब्रह्मा ने एक रूप दिया। देवताओं ने आकर उस समय सोम मंत्र का पाठ किया। तब चन्द्रमा (सोम) पैदा हो गया।

एक यह भी विचार है कि चन्द्रमा का जन्म देवताओं के आहार के लिए हुआ।

क्षीर सागर के मंथन के समय अमृत के साथ लक्ष्मी, चन्द्रमा, कल्पवृक्ष, ऐरावत, उच्चैश्रव इत्यादि पैदा हुए। इस दृष्टि से भी देखा जाय तो चन्द्रमा का जन्म समुद्र से ही हुआ है। क्षीर सागर के मंथन से उत्पन्न अमृत का पान करने के लिए देवता और राक्षस दो पंक्तियों में बैठ गये। देवताओं की पंक्ति में चन्द्रमा भी बैठ गया। उस वक्त राहू नामक राक्षस देवता के रूप में आया और वह भी अमृत पीने लगा। चन्द्रमा ने इसे देख विष्णु से बताया। विष्णु ने चक्रायुध से राहू का सर काट दिया। लेकिन अमृत पीने के कारण वह मरा नहीं, इसी कोप से

जब-तब वह चन्द्रमा को निगलता रहता है। उसी को हम चन्द्रग्रहण कहते हैं।

चन्द्रमा की शिक्षा-दीक्षा बृहस्पति के पास हुई। बृहस्पति की पत्नी तारा चन्द्रमा के साथ रहती आयी। इसलिए वह गर्भवती हुई। चन्द्रमा तारा को लेकर भाग गया। बृहस्पति ने चन्द्रमा से पूछा कि तारा को उसे लौटा दे। चन्द्रमा ने देने से इनकार किया। राक्षस देवताओं तथा देव-गुरु बृहस्पति के दुश्मन थे। इसलिए उन लोगों ने चन्द्रमा का पक्ष लेकर बृहस्पति को भगा दिया। बृहस्पति ने ब्रह्मा आदि से प्रार्थना की।

इस बीच में तारा ने एक पुत्र को जन्म दिया। इस पर बृहस्पति और चन्द्रमा झगड़ा करने लगे। ब्रह्मदेव की समझ में न आया कि किसकी बात पर विश्वास करे। उसने तारा से ही पूछा कि असली बात बता दे। तारा ने जवाब दिया कि वह चन्द्रमा द्वारा उत्पन्न पुत्र है। ब्रह्मा ने तारा के पुत्र को चन्द्रमा को और तारा को बृहस्पति को दिलाया।

इस तरह तारा और चन्द्रमा से जो पुत्र पैदा हुआ, वही बुध है। (बुध का दूसरा नाम सौम्य है अर्थात सोम का पुत्र है। यह वर्ष तेलुगु पंचांग के अनुसार सौम्य संवत्सर है। यह नाम भी चन्द्रमा के द्वारा ही आया है। इस दृष्टि से भी यह 'चन्दामामा' का संवत्सर है।)

दक्ष के २७ पुत्रियाँ थीं। २७ नक्षत्रों के नाम ही उनके नाम हैं। दक्ष ने उन सब का विवाह चन्द्रमा के साथ किया। मगर चन्द्रमा रोहिणी से ज्यादा प्यार करता था। इससे नाराज होकर चन्द्रमा की अन्य २६ पत्नियों ने अपने पिता दक्ष से शिकायत की। दक्ष ने क्रोध में आकर चन्द्रमा को क्षय होने का शाप दिया। इस शाप से डरकर चन्द्रमा ने शिवजी की शरण

की। शिवजी ने उसे अपने भाल पर रखकर उसकी रक्षा की। इस तरह चन्द्रमा अपनी पत्नियों से दूर हो गया।

दक्ष ने शिवजी से निवेदन किया कि वे चन्द्रमा को छोड़ दें। शिवजी ने शरणागत को छोड़ने से इनकार किया। तब दक्ष शिवजी को ही शाप देने गया। उस वक्त ब्रह्मा ने उन दोनों के बीच समझौता किया। उन्होंने चन्द्रमा के दो भाग किये। अक्षयवाले भाग को शिवजी को और क्षय होनेवाले अंश को दक्ष की पुत्रियों को दिया।

एक दूसरी कथा यों है—दक्ष ने जिस वक्त चन्द्रमा को शाप दिया, तब वह कहीं गायब हो गया। इसके फलस्वरूप पृथ्वी पर वर्षा और फ़सल बंद हो गयीं। यज्ञ भी बंद हुए। सब देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर प्रार्थना की कि चन्द्रमा को फिर बुला लावें। ब्रह्मा ने बताया कि चन्द्रमा औषधियों के बीच छिपा हुआ है, और उन औषधियों को समुद्र में डालकर मंथन करने से फिर चन्द्रमा दिखाई देगा।

इस पर देवताओं तथा राक्षसों ने मिलकर क्षीरसागर का मंथन किया। तब उसमें से चन्द्रमा पैदा हुआ।

चन्द्रमा के शिवजी के सर पर सुशोभित हो जाने की एक दूसरी कथा भी है।

दक्ष ने धरनी नामक अपनी पत्नी के द्वारा पचास पुत्रियाँ पैदा की। उनमें से बड़ी पुत्री सती ने शिवजी के साथ विवाह किया। एक बार शिवजी ब्रह्मा के द्वारा किये जानेवाले यज्ञ को देखने गये। उस वक्त दक्ष भी वहाँ पहुँचे। दक्ष के आगमन पर सब खड़े हो गये। पर शिवजी बैठे ही रहे। शिवजी पर उन्हें क्रोध आया।

दक्ष जब-तब अपनी सभी पुत्रियों को घर बुलाकर उन्हें नये वस्त्र और उपहार दिया करते थे। शिवजी की पत्नी सती को कभी निमंत्रण नहीं देते थे। सती के मन में अपनी बहनों को देखने की बड़ी इच्छा थी। जब उसे मालूम हुआ कि दक्ष यज्ञ कर रहे हैं, तब निमंत्रण न मिलने पर भी सती अपने मायके गयी।

"तुम मेरे घर क्यों आयी हो?" दक्ष ने सती से पूछा।

"मैंने अपराध ही क्या किया है?" सती ने अपने पिता से कारण पूछा।

"तुम्हारा पति मेरा आदर नहीं करता। तुम्हारे कारण ही मेरी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिलती जा रही है।" दक्ष ने शिवजी को गालियाँ भी दीं। इस अपमान से दुखी होकर सती ने अग्नि में कूदकर प्राण त्याग दिये। यह समाचार मिलते ही शिवजी अपने प्रमद गणों को साथ लेकर वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने दक्ष के यज्ञ को ध्वंस किया और वहाँ पर इकट्ठे हुए सब लोगों को मार डाला।

चन्द्रमा भी उस यज्ञ को देखने आया था। उस बीभत्स कांड में चन्द्रमा शिवजी के पैरों के नीचे दबने लगा। तब उसने शिवजी से उसे बचाने की प्रार्थना की। इस पर शिवजी ने चन्द्रमा को उठाकर अपने सर पर रख लिया।

चन्द्रमा के बारे में एक और कथा भी है। विघ्नेश्वर एक दिन प्रदोष के समय

भर पेट खाकर शिवजी को प्रणाम करने जा रहे थे। पेट भरा हुआ था, इसलिए एक-एक कदम बढ़ाना उन्हें मुश्किल सा मालूम होने लगा। तब उनको देख चन्द्रमा ठठाकर हंस पड़ा। उसके हंसते ही विघ्नेश्वर का पेट फूट गया और सभी पदार्थ नीचे जा गिरे। तब कहा जाता है कि विघ्नेश्वर के फटे पेट को सांपों से सिया गया।

यह समाचार सुनकर पार्वती ने चन्द्रमा को शाप दिया कि आज से कोई भी चन्द्रमा को न देखे, अगर देखता है तो वह अपराधों का शिकार हो जायगा। यह समाचार देवताओं के लिए दुख का कारण बना। उन्होंने पार्वतीजी के पास जाकर प्रार्थना की–"चन्द्रमा को देखे बिना हमारा काम कैसे चलेगा? इसलिए आप कृपा करके अपने शाप को वापस ले लीजिये।" विघ्नेश्वर की जन्म-तिथि भाद्रपद शुक्ला चौथी को पड़ती है। पार्वती ने उन्हें सूचित किया कि विघ्नेश्वर के जन्म-दिन के अवसर पर जो लोग यह कथा सुनेंगे, वे इस शाप से मुक्त होंगे। भाद्रपद शुक्ला चौथी का मतलब विनायक चौथी है। उस दिन हम सब यह कहानी कहते व सुनते हैं। इसलिए

उस दिन चन्द्रमा को देखने पर हम अपराधों के शिकार नहीं होते ।

कृष्ण को शायद यह कथा मालूम न थी । इसलिए वे बड़े अपराध के शिकार हो कठिनाइयों में फँस गये थे । वह यह है, सत्राजित को सूर्य ने श्यमंतक मणि दिया था । कृष्ण ने जब सत्राजित से वह मणि माँगा तब उसने उनको नहीं दिया, बल्कि अपने भाई प्रसेन के माँगने पर उसे दे दिया । एक दिन प्रसेन जंगल से होकर जा रहा था । तब एक सिंह ने उसे मारकर मणि ले लिया । जांबवंत उस सिंह को मारकर वह मणि ले गया । यह दोषारोपण कृष्ण पर किया गया कि कृष्ण ने ही प्रसेन को मारकर मणि ले लिया है । इस दोषारोपण से बचने के लिए कृष्ण जांबवंत के पद-चिह्नों को ढूँढते उसके पास गये । तब जांबवंत से युद्ध करके उस श्यमंतक मणि के साथ जांबवती को भी प्राप्त किया । फिर भी कृष्ण उस दोषारोपण से आसानी से बच न सके ।

श्यमंतक मणि फिर से सत्राजित को प्राप्त हुआ । तब यह साबित हुआ कि कृष्ण निरपराधी हैं । कुछ समय बाद शतधन्वु ने सत्राजित से वह मणि माँगा । सत्राजित के इनकार करने पर शतधन्वु उसे मारकर मणि लेकर भाग गया । इसके बाद कृष्ण ने शतधन्वु से युद्ध करके उसे मार डाला । तब लोगों ने सोचा कि श्यमंतकमणि कृष्ण को प्राप्त हो गया है ।

एक बार बलराम ने कृष्ण से पूछा– "भैया वह श्यमंतक मणि दिखाओ?"

कृष्ण ने कहा–" मणि मेरे पास नहीं है । शतधन्वु के पुत्र भोज के पास ही है ।"

बलराम ने विश्वास नहीं किया । वह कृष्ण पर नाराज हो गये । इस तरह पार्वती के शाप के शिकार हुए लोग सत्य भी बतावें तो भी कोई विश्वास नहीं करता !

गगन का चाँद

गगन के चांद को हम सब प्रति दिन देखते हैं। चांद भी पृथ्वी जैसा एक गोल है। यह गोल पृथ्वी के चारों तरफ महीने में एक बार परिक्रमा करता है और भूमण्डल के साथ मिलकर साल में एक बार सूर्य की परिक्रमा करता है। चन्द्रमा पर सूर्य की जो कांति पड़ती है, उसे हम चांदनी कहते हैं। सदा चन्द्रमा का आधा भाग सूर्य की कांति में रहता है। सूर्य की कांति जिस आधे भाग पर पड़ती है, वह पूरा भाग जब पृथ्वी की ओर मुख किये रहता, उसे हम पूर्णिमा कहते हैं। चन्द्रमा का वह भाग जब भूमण्डल को बिलकुल दिखाई नहीं देता है, तब वह अमावास्या कहलाता है। चन्द्रमा पर पड़नेवाली सूर्य की कांति के बीच जब भूमण्डल आता है, तब चन्द्रग्रहण कहलाता है। भूमण्डल तथा सूर्य के बीच चन्द्रमा के आने से वह सूर्यग्रहण कहलाता है। इसलिए सदा चन्द्रग्रहण पूर्णिमा के दिन तथा सूर्यग्रहण अमावास्या के दिन पड़ते हैं।

पंचांगों में बहुत समय पूर्व ही ये ग्रहण कब पड़ते हैं, कितनी देर रहते हैं, कहाँ-कहाँ पर कितने परिमाण में दिखाई देते हैं, गणना करके बताये जाते हैं।

दूरबीन से देखने पर हमें ऐसा दीखता है कि चन्द्रमण्डल पर समुद्र तथा पहाड़ फैले हुए हैं। परंतु शास्त्रवेत्ताओं ने अनुसंधान करके स्पष्ट रूप से जान लिया है कि चन्द्रमण्डल पृथ्वी से लगभग ढाई लाख मील दूरी पर है, वहाँ पर हवा, पानी तथा किसी भी प्रकार के प्राणियों का निवास नहीं, तथा

उसकी चुंबक शक्ति पृथ्वी की चुंबक शक्ति में से छठवीं मात्र होती है!

ऐसी बातें जाने बिना चन्द्रमण्डल पर जाने से कैसा खतरा उपस्थित होता! जहाँ वायु और जल नहीं है, वहाँ पर मनुष्य थोड़े क्षण भी जिंदा नहीं रह सकता। इसके साथ अन्य खतरे भी कम नहीं हैं। अनेक समस्याओं को सुलझाने के बाद ही पृथ्वी पर के प्राणी चन्द्रमा पर जा सकते हैं।

सब से पहली समस्या—पृथ्वी की चुंबक शक्ति से कैसे बचे? आज से २४०० वर्ष पूर्व सुकरात नामक एक ग्रीक दार्शनिक ने बताया था—"हम लोग इस पृथ्वी पर कुएं के मेंढकों की भाँति निवास करते हैं।" यह सच है कि पृथ्वी की चुंबक शक्ति आसमान में ४३,४९५ मील तक हमें छोड़ नहीं सकती। उतनी दूरी तक कैसे जावें? उस परिधि को पार कर जाना हो तो पृथ्वी के वातावरण से लगभग फ़ी घंटे २५ हजार मीलों की गति के साथ यात्रा करनी होगी। उतनी तेज़ गति से चलनेवाले यंत्र हों तो, हम लोग "कुएँ के तले रहनेवाले मेंढकों" की दशा से "कुएँ के बाहर कूदनेवाले मेंढक" बन जायेंगे!

इस समस्या को रॉकेट की इंजिनें सुलझा सकती हैं। पृथ्वी की चुंबक शक्ति पर विजय प्राप्त करनेवाली रॉकेटों की इंजिनें कुछ समय पूर्व निर्मित हुईं और वे सफलता पूर्वक कार्य कर रही हैं।

दूसरी समस्या: चन्द्रमण्डल पर सुरक्षा के साथ कैसे उतरे?

यह कोई मामूली समस्या नहीं है। मान लीजिये, हमने जिस रॉकेट का प्रयोग किया, वह पृथ्वी की चुंबक शक्ति को पार कर ४३,४९५ मील के आगे चला गया। तब रॉकेट को चन्द्रमा अपनी ओर खींचने लगता है। पृथ्वी की चुंबक शक्ति के साथ तुलना करके देखें तो चन्द्रमा की चुंबक शक्ति कम ही है। फिर भी दो

लाख मील तक पहुँचा हुआ राकेट चुंबक शक्ति का शिकार हो तीव्रतर गति को प्राप्त करता है। उसी गति के साथ अगर राकेट चन्द्रमा से टकरायेगा तो राकेट के साथ उसमें रहनेवाले मनुष्य भी चटनी हो जायेंगे।

इस समस्या को सुलझाना हो तो चन्द्रमण्डल की यात्रा के लिए प्रतिरोध करनेवाले राकेटों की आवश्यकता है। चन्द्रमा के निकट पहुँचते-पहुँचते चन्द्रयान की गति के बढ़ते रहने पर ये 'प्रतिरोधी राकेट' उस गति को इस तरह मंद कर देते हैं कि चन्द्रतल पर पहुँचते वक़्त उतरनेवाले पक्षी की भाँति गतिहीन हो जाते हैं।

तीसरी समस्या: मानव पृथ्वी की जलवायु के अभ्यस्त है। वायु और जल से विहीन चन्द्रलोक में उसे जाना हो तो उसके लिए आवश्यक वायु तथा उसमें स्थित नमी को भी साथ ले जाना होगा। इसके लिए कुछ विशेष प्रकार की पोशाकें तथा उपकरणों की आवश्यकता है।

चौथी समस्या: गगन मण्डल में यात्रा करनेवाला व्यक्ति भारविहीन स्थिति में होता है। ऐसी हालत में काम करना, खाने तथा सोने में भी कठिनाई होती है। समस्याएँ ऐसी हों तो खतरों की क्या कमी है?

यदि चन्द्रयान निर्देशित मार्ग में नहीं चलता तो उसकी गति की बात कही नहीं जा सकती। ऐसी स्थिति से बचाने के लिए उसके 'मार्ग' को निर्देशित करना पड़ता है।

चन्द्रयान से बड़ी-बड़ी उल्काओं के टकराने से भयंकर खतरा भी पैदा हो सकता है!

हम पृथ्वी के निवासियों की रक्षा वायु की परतें करती हैं। सूर्य से प्रसारित होनेवाले खतरनाक पदार्थ वायु में विलीन हो जाते हैं। कुछ पदार्थ कमजोर हो जाते हैं। परंतु पृथ्वी के वायुमण्डल को पार कर शून्याकाश में जानेवालों को वायु

प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार की समस्याओं को सुलझाकर खतरों से अपनी रक्षा करते हुए मानव पृथ्वी से निकलकर चन्द्रमण्डल पर उतरे तथा वहाँ से पुनः सुरक्षित भूतल पर पहुँच गये।

चन्द्रमण्डल के यात्री हैं श्री नील आमस्ट्रांग, एड्विन आल्ड्रिन, तथा माइकेल कालिन्स। इन लोगों ने जिस राकेट पर यात्रा की, उस का नाम अपोलो ११ है, उसकी ऊँचाई ३६३ फुट है। यह तीन स्तरोंवाला राकेट है। इसकी सहायता से कोलंबिया तथा ईगिल नामक दो अंतरिक्ष यान चन्द्रमण्डल के वायुमण्डल में पहुँचे।

अपोलो ११ जैसा भारी राकेट आज तक प्रयोग में लाया नहीं गया। उसका वजन ६४ लाख ५४ हज़ार २५७ पौण्ड है। इस में डेढ़ करोड़ विभाग हैं। यह राकेट १६ जुलाई के प्रातःकाल साढ़े नौ बजे केप केनडी से रवाना हुआ। १२ मिनटों के अन्दर वह १७,४२७ मील की गति को प्राप्तकर ११९ मील की ऊँचाई पर पृथ्वी की परिधि में परिक्रमा करने लगा। इस प्रकार ढाई घंटे तक पृथ्वी की परिक्रमा करने के बाद राकेट का तीसरा स्तर खोला गया। तीसरे राकेट की इंजिन ने पाँच मिनट तक ही काम किया होगा कि चन्द्रमण्डल की यात्रा के लिए आवश्यक गति-फ़ी घंटे २४,२४५ मील आ गयी।

यह गति पृथ्वी की चुंबक परिधि को पार करने तक कम होती गयी और चन्द्रमा की चुंबक परिधि में पहुँचते ही पुनः बढ़ गयी। इस दशा में कोलंबिया तथा ईगिल नामक यान राकेट के तीसरे स्तर से अलग हो गये, लेकिन वे दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए थे। इस जोड़े यानों की गति "प्रतिरोधी" राकेट के प्रयोग द्वारा घटायी गयी। तब वे दोनों यान चन्द्रमा की परिधि में घूमने लग गये।

बीस घंटों तक चन्द्रमा के चारों तरफ़ परिक्रमा करने के बाद आमस्ट्रांग तथा आल्ड्रिन ने ईगिल यान में प्रवेश करके "गगन-पोशाकें" पहन लीं। ये दोनों ही चन्द्रमण्डल पर उतरनेवाले थे। इसलिए उन के लिए एसी पोशाकें तथा अन्य उपकरणों की ज़रूरत थी।

कालिन्स कोलंबिया यान में ही रहकर चन्द्रमा की परिधि में घूम ही रहा था कि आमस्ट्रांग और आल्ड्रिन ईगिल यान को कोलंबिया से अलग कर चन्द्रमा पर उतर गये। चन्द्रमा पर उतरते ही ईगिल यान की गति फ़ी सेकंड तीन फुट से अधिक नहीं होनी चाहिये। इसीलिए ईगिल यान जब चन्द्रमा के उपरितल से ५० हज़ार फुट की ऊँचाई पर था तभी उसके राकेट की इंजिन का प्रयोग किया गया। इस वजह से ईगिल निर्देशित स्थान में बिना खतरे के उतर गया।

इसके बाद अंतरिक्ष यात्रियों ने तुरंत चन्द्रमा के उपरितल पर क़दम नहीं रखा, भोजन करके कुछ घंटों तक आराम किया। फिर जुलाई २१ को सोमवार के दिन (यह भी चन्द्रमा का दिन है!) चन्द्रमा पर सूर्योदय के समय आमस्ट्रांग ईगिल से अपना बायाँ पैर नीचे रखकर उतरा। वह अपने साथ जो एक विशेष प्रकार का टेलिविज़न-कैमरा लाया था, उसे बाहर एक स्टैण्ड पर बिठाया। इस कैमरे की मदद से ही चन्द्रमा पर आमस्ट्रांग तथा आल्ड्रिन ने जो कुछ किया, उसे पृथ्वी पर के लोगों ने देखा।

आमस्ट्रांग के उतरने के थोड़ी देर बाद आल्ड्रिन ने भी चन्द्रमा पर क़दम रखा। चन्द्रमा की धूलि पर उनके पैरों के चिन्ह पड़ गये। वे चिन्ह पृथ्वी के निवासियों को टेलिविज़न में दिखाई दिये।

इसके बाद उन दोनों ने चन्द्रमा की कुछ शिलाओं को खोदकर पेटियों में बंद

किया। तब फिर ईगिल में प्रवेश किया। ईगिल से उड़कर उसे चलाते हुए कोलंबिया यान के घूमनेवाली परिधि में पहुँचे। तब उन दोनों यानों को जोड़कर वे कोलंबिया यान में आये।

आमस्ट्रांग और आल्ड्रिन कोलंबिया यान को छोड़कर २७ घंटे ४७ मिनट अलग रहे।

कोलंबिया ने लौटती यात्रा करके चन्द्रमा के यात्रियों को जुलाई २४ के सूर्योदय के पूर्व ही प्रशांत महासागर में 'हवाई' से ९५० मील दूर दक्षिण-पश्चिमी दिशा में उतारा।

कुल मिलाकर चन्द्रमा की यात्रा १९५ घंटे १५ मिनट २१ सेकण्डों में समाप्त हुई।

चन्द्रमा के यात्रियों ने चन्द्रमण्डल पर न केवल अनुसंधान संबंधी उपकरण छोड़ दिये, बल्कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का झंडा भी फहरा दिया। साथ ही डेढ़ इंच व्यासवाली पक्षी की आकृतिवाला मुद्रा रखी। उस में सूक्ष्म लिपि में आइसनहोवर, केनेडी, जान्सन और निक्सन के संदेश तथा ७२ देशों के प्रमुख व्यक्तियों के संदेश भी अंकित हैं। साथ ही गगारिन, कुमरोव, ग्रिसम इत्यादि अंतरिक्ष यात्री वीरों के स्मृति-चिह्नों के रूप में पदक, आदि भी रखे। लौटती यात्रा के लिए अनावश्यक सामग्री को वे लोग चन्द्रमा पर ही छोड़कर चले आये।

शास्त्रवेत्ताओं का विश्वास है कि चन्द्रमा पर से लायी गयी शिलाओं तथा धूलि की जाँच करने से यह मालूम हो जायगा कि चन्द्रमा की उत्पत्ति कैसे हुई और इस विश्व का निर्माण कैसे हुआ। चाहे जो भी हो, चन्द्रमा के इस यान ने मानव के इतिहास में एक नया अध्याय प्रारंभ किया है। कहा जाता है कि इस अध्याय में अन्य ग्रहों की यात्रा भी संभव है! देखें, भविष्य के गर्भ में क्या है!
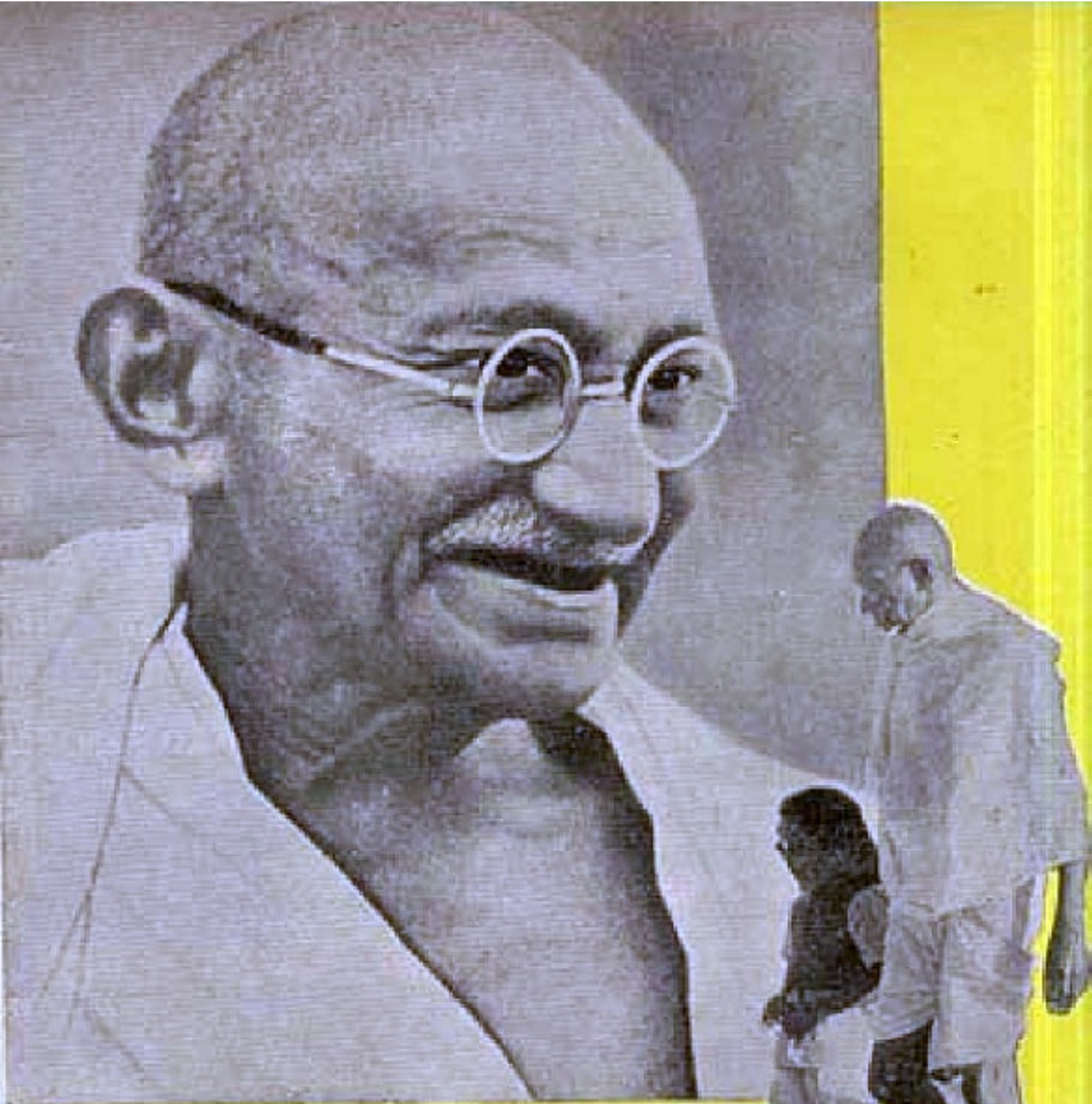
गांधीजी का अल्बम
'चन्दामामा' दीपावली - विशेषांक परिशिष्ट

गांधीजी का जन्म-स्थान

महात्मा गांधीजी की

शत-जयंती

१९६९

गांधीजी-दंपति

दक्षिण आफ्रिका में बैरिस्टर गांधी

सरदार पटेलजी के साथ गांधीजी

देश का भ्रमण करनेवाले गांधीजी

लार्ड पेथिक लारेन्स के साथ गांधीजी

नमक-सत्याग्रह : सरोजिनी देवी के साथ

माउंटबेटन-दंपति के साथ गांधीजी

पं. जवाहरलाल के साथ गांधीजी

सेवाग्राम का आश्रम

गांधीजी की संपत्ति

अंतिम-यात्रा
राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी

लालच बुरी होती है

बहुत दिन पहले की बात है। एक गाँव में गंगादास नामक एक वैद्य था। वह बीमारियाँ दूर करने में प्रवीण था, लेकिन बड़ा लालची था। गरीबों के प्रति उसके मन में जरा भी दया न थी। इलाज कराने जो भी उसके पास पहुँचता, उस से कसकर रुपये ऐंठ लेता। इसलिए लोग इलाज कराने के लिए उसके पास जाने में डर जाते थे। मगर उस गाँव के बीस-पच्चीस कोसों की दूरी में कोई दूसरा वैद्य न था। लोग लाचार थे।

लोगों को चूसकर धन कमाने पर भी गंगादास की लालच दूर न हुई। उल्टे उसकी लालच बढ़ती ही गयी।

उसी गाँव में रामनाथ नामक एक अमीर था। वह बड़ा दयालू था। भर सक दूसरों की मदद किया करता था। इसलिए लोग रामनाथ की बड़ी इज्जत करते थे। लेकिन गंगादास उससे जलता था। उसका विचार था कि रामनाथ की वजह से ही उसकी इज्जत मिट्टी में मिलती जा रही है। उसने रामनाथ को नीचा दिखाने के कई प्रयत्न किये, परंतु असफल रहा। मगर एक बार गंगादास को अच्छा मौका मिला। रामनाथ का इकलौता बेटा अचानक बीमार पड़ गया। लड़के की बड़ी बुरी हालत थी। लाचार होकर रामनाथ ने गंगादास को लड़के का इलाज करने बुला भेजा।

गंगादास ने आकर लड़के की जाँच की! गहरी साँस लेकर बोला—"महाशय, यह जहरीली बीमारी है। इसका इलाज बड़ी मेहनत का तथा खर्चीला है।"

रामनाथ ने गंगादास के हाथ पकड़कर कहा—"गंगादासजी, आप जानते ही हैं कि यह मेरा इकलौता बेटा है। चाहे जितनी

रमण सिंह

भी मेहनत का क्यों न हो, आप को इस लड़के को बचाना ही होगा। जो भी खर्च होगा, उठाने में मैं हाथ नहीं खींचूंगा।"

गंगादास ने झूठी सहानुभूति दिखाते हुये कहा–"रामनाथजी, मैं आपके स्वभाव को जानता हूँ। इसलिए मैं पूरी मेहनत करने को तैयार हूँ। लेकिन इसके इलाज के लिए महापूत याने एक सौ ग्यारह साल पुराना घी चाहिये अथवा स्वर्ण भस्म तैयार करना होगा। इसके लिए एक मन भर सोना चाहिये।"

वैद्य के मुँह से यह बात सुनकर रामनाथ का कलेजा काँप उठा। गंगादास की दुष्टता उसे मालूम हो गयी। फिर भी रामनाथ ने विनयपूर्वक कहा–"महाशय, मैं अपनी सारी जायदाद बेच डालूँ, तब भी मन-भर सोना नहीं मिलेगा। आप कोई रास्ता ढूँढ निकालिये।"

"इस बीमारी का कोई दूसरा इलाज नहीं है। फिर आप की मर्जी! आप ही निर्णय कर लीजिये, आप अपने लड़के की जान बचाना चाहेंगे या अपनी जायदाद।" गंगादास ने स्पष्टता के साथ कहा।

रामनाथ जानता था कि गंगादास के सामने गिड़गिड़ाने से कोई फ़ायदा नहीं है। उसका दिल पत्थर का है। इसलिए

भगवान पर भरोसा रख कर मन भर सोना देने को रामनाथ ने मान लिया।

इलाज के पीछे रामनाथ की सारी जायदाद स्वाहा हो गयी। गंगादास ने ऐसा अभिनय किया, मानों इलाज करने में बड़ी मेहनत उठा रहा हो! लड़का चंगा हो गया और चलने-फिरने भी लगा।

गंगादास ने रामनाथ के साथ जो अन्याय किया था, उसकी कल्पना मात्र से उसका दिल जल उठा। उसने निर्णय किया कि इसका बदला लेकर गंगादास की आँखें खुलवानी हैं। वरना गंगादास अपनी लालच के कारण और अनेक परिवारों को तबाह कर डालेगा। कुछ दिन बाद रामनाथ अपनी पत्नी और पुत्र को लेकर गाँव छोड़कर कहीं चला गया।

गाँव में यह अफ़वाह उड़ गयी कि रामनाथ गंगादास से बदला लेना चाहता है और मौका पाकर वह गंगादास का घर लूट लेगा। यह अफ़वाह उड़ानेवाला व्यक्ति रामनाथ का एक विश्वासपात्र किसान ही था।

अफ़वाह सुनकर गंगादास घबरा गया। क्योंकि उसका गाँव बहुत ही छोटा था और उसमें गंगादास की मदद करनेवाला एक भी व्यक्ति न था। रात भर सोचकर गंगादास एक निर्णय पर पहुँचा। वह यह था कि उसके पास जो कुछ सोना और धन है, उसे शहर में ले जाकर सरकारी खजाने में छिपा रखे।

अपने विश्वासपात्र दो नौकरों को साथ ले सारा सोना व रुपये लेकर गंगादास सवेरे ही शहर के लिए रवाना हुआ।

एक पहाड़ी मोड़ को पार करते ही चोरों ने गंगादास को घेर लिया। गंगादास घबरा उठा। वह चोरों का सामना करने की हालत में न था। कुल मिलाकर बीस

चोर थे। चोरों ने गंगादास को एक पहाड़ी गुफा में बंदी बनाया। लेकिन उन लोगों ने गंगादास के सोने व रुपयों को नहीं छीना। इसलिए उसे आश्चर्य भी हुआ। उसने गुफा के बाहर पहरा देनेवाले चोर को बुलाकर पूछा—"देखो भाई, मेरे पास थोड़े से रुपये हैं। इन्हें लेकर मुझे छोड़ दो न?"

"हमारे नेता की ऐसी आज्ञा नहीं है।" चोर ने लापरवाही से उत्तर दिया।

"अच्छा, यह तो बताओ कि मुझे खाना-पानी दोगे या भूखों मार डालोगे?" गंगादास ने पूछा।

"उसकी कीमत दोगे तो जो चाहे सो ला देता हूँ।" चोर ने जवाब दिया।

"कितने रुपये चाहिये?" गंगादास ने पूछा।

"खाने के लिए एक लाख रुपये और पानी के लिए पचास हजार।" चोर ने उत्तर दिया।

गंगादास चौंक पड़ा। "अरे खाने के लिए लाख रुपये? यह कैसा अन्याय है? यह तो सरासर दगा है।" गंगादास ने दांत भींचते हुए कहा।

"मैं नहीं जानता कि यह न्याय है या अन्याय! बस उनकी कीमत यही है।

बाज़ी

एक बार दो ब्राह्मण ब्रह्मचारियों ने एक होटल में जाकर भोजन किया। दोनों के भोजन का खर्च एक ही को उठाने के लिए उन दोनों ने एक बाज़ी लगायी। बाज़ी यों थी। एक व्यक्ति दूसरे से एक प्रश्न पूछेगा। दूसरा व्यक्ति उसका जवाब न दे सका या प्रश्न करनेवाला ही उसका जवाब भी दे, तो दूसरा व्यक्ति हारा हुआ समझा जायगा और उसे दोनों का भोजन-खर्च उठाना होगा।

एक ने दूसरे से यों प्रश्न पूछा।

"इस दीखनेवाले चूहे के बिलौटे के पास मिट्टी क्यों नहीं है?"

"मैं नहीं जानता, तुम्हीं बताओ!" दूसरे ने कहा।

"वह जमीन के अन्दर रहके बिलौटा बनाते बाहर आया। इसलिए!" पहले व्यक्ति ने जवाब दिया।

"वास्तव में वह जमीन के अंदर कैसे गया?" दूसरे व्यक्ति ने पूछा।

"यह तुम्हारा सवाल है, इसका जवाब भी तुम्हीं बताओ!" पहले ने कहा।

दूसरे व्यक्ति ने चुपचाप दोनों के भोजन के रुपये दे दिये।

आप ही फ़ैसला कीजिये कि आपको खाना चाहिये या रुपये चाहिये।" चोर ने लापरवाही से उत्तर दिया।

गंगादास ने दो दिन बिना खाना-पानी के बिता दिये। उसे लगा कि उसने रामनाथ के साथ जो धोखा दिया था, उसके दण्ड स्वरूप ईश्वर ने ऐसी सज़ा दी है। भूख सता रही थी। आँखों के सामने अँधेरा फैलता जा रहा था। उसने सोचा कि बिना अन्न-जल के उसके मर जाने पर वह सारा धन चोरों के हाथ लग जायगा, इससे अच्छा यह है कि थोड़ा खा-पीकर जान बचा ले।

चोर को बुलाकर गंगादास ने अपनी स्वीकृति दी। दो सप्ताह भी पूरे न हो पाये थे कि गंगादास के सारे रुपये व सोना खतम हो गया। अब एक कंवल खाना और अंजुली भर पानी के लिए उसे तड़पने की नौबत आयी। यह सोचकर उसकी आँखों में आँसू आये।

इस पर गंगादास ने चोरों के सरदार को बुला भेजा और उसे प्रणाम करते हुए प्रार्थना पूर्वक खाना माँगा।

"गंगादास, जिस वक़्त तुमने रामनाथ की जायदाद हड़प ली और गाँव के लोगों को चूस लिया, तब उन लोगों ने भी ऐसी ही यातनाएँ भोगी थीं। क्या तुम उनकी हालत समझ नहीं पाये?" चोरों के सरदार ने पूछा।

उसके कंठ को पहचान कर गंगादास ने कहा—"रामनाथ, मुझे क्षमा कर दो। लालच में पड़कर मैंने तुम सबको लूट लिया। सारे गाँववालों को तंग किया। अभी अभी मुझे प्राणों का मूल्य मालूम हो रहा है।" ये शब्द कहते गंगादास फूट-फूटकर रो पड़ा।

रामनाथ गंगादास को समझा-बुझाकर अपने गाँव में ले गया। इसके बाद गंगादास बड़ा परोपकारी बना।

भाई-भाई

मगध देश के जंगली प्रदेश में एक भील सरदार रहा करता था। उसके तीन लड़के पैदा हुए! जब वे तीनों जवान हुए, तब भील सरदार बूढ़ा हो चला था। उस बुढ़ापे में भी भील सरदार के एक और लड़का पैदा हुआ। तीनों बड़े बेटे देखने में सुंदर थे। उन्हें देख कोई भील नहीं मान सकता था। लेकिन चौथा लड़का एकदम काला-कलूटा व ठीक भील जैसे ही था। इसलिए लोग उसे करिमित्र पुकारते थे।

चौथा लड़का बड़ा होशियार और अक्लमंद था। इसलिए भील सरदार उसे बहुत प्यार करता था। वह चाहता था कि उसकी मौत के बाद करिमित्र ही भीलों का सरदार बने।

बड़े पुत्र तीनों जंगली जीवन से ऊबकर अपनी जाति से अलग हो गये और सभ्य नागरिकों की भाँति जीवन बिताने का निश्चय किया। सिपाही बनने की सारी शक्तियाँ उन्हें प्राप्त थीं। लेकिन कठिनाई यह थी कि अगर लोगों को यह मालूम हो जाय कि ये भील हैं तो सभ्य लोग उन्हें दूर ही रखेंगे। इसलिए तीनों ने आपस में निर्णय किया।

"हम अपने को मागध कहलायेंगे। हम मागधी भाषा जानते हैं। हमारा वर्ण देख कोई यह नहीं समझ पायगा कि हम जंगली हैं।"

जब तीनों ने जाकर अपने पिता से पूछा कि हम स्वतंत्र रूप से जिंदगी बिताना चाहते हैं, तब उसने कोई आपत्ति नहीं उठायी, बल्कि प्रत्येक को एक एक घोड़ा और थोड़ा-सा धन भी दिया।

वे घूमते-घूमते आखिर एक राज्य में पहुँचे। ठीक उसी समय उस देश का

सुरेन्द्र तिवारी

राजा युद्ध की तैयारियाँ करते सैनिकों की भर्ती कर रहा था। तीनों ने फौज में भर्ती होने की इच्छा प्रकट की। वह राजा विदेशियों को भी अपनी सेना में भर्ती करने से संकोच नहीं करता था। लेकिन जंगली लोगों से घृणा करता था।

"हम मगधवासी हैं, राजवंशी हैं।" तीनों ने राजा से कहा। इस तरह वे तीनों भाई फौज में भर्ती हुए और लड़ाई में अपनी वीरता दिखाकर राजा की प्रशंसा पायी। राजा ने उन्हें पुरस्कार बाँटते हुए बड़े भाई से पूछा—"तुम किस साल किस तारीख को पैदा हुए?"

बड़े भाई को यह मालूम नहीं था कि वह कब पैदा हुआ है। मगर उसने झूठमूठ कोई साल, महीना और तारीख बता दी।

यह बात सुनकर राजा चकित हुआ और बोला—"यह कैसे आश्चर्य की बात है? मेरी बड़ी पुत्री ठीक इसी साल, इसी तारीख को पैदा हुई है।" इस पर राजा ने सोचा कि यह युवक मगध देश का राजवंशी है, सुंदर और वीर भी है। इसके साथ अपनी बड़ी पुत्री का विवाह करना उचित होगा। इसलिए राजा ने उन दोनों के विवाह का निर्णय कर एक दावत का प्रबंध किया। उस दावत में उस युवक को एक और विचित्र समाचार मालूम हुआ। जैसे उसके दो जवान छोटे भाई तथा एक बहुत ही कम उम्र का भाई है, वैसे ही बड़ी राजकुमारी के भी युक्त वयस्का दो बहनें तथा छे साल की एक छोटी बहन भी हैं।

"मुझे तो आश्चर्य होता है! ईश्वर की इच्छा है कि हमारे दो परिवारों के बीच संबंध स्थापित होना है। पहले मैं तुम तीनों का अपनी तीन बड़ी पुत्रियों के साथ विवाह करूँगा। इसके बाद तुम्हारे सबसे छोटे भाई को लाकर मैं अपने पास रखूँगा और उसके बड़े होने पर अपनी छोटी

लड़की के साथ उसका विवाह करूँगा।" राजा ने बताया।

तीनों शादियाँ एक साथ ठाठ से संपन्न हुईं। कुछ दिन बीतने पर राजा ने उनसे कहा—"तुम लोग अपने देश में जाकर अपने माता-पिता से तुम्हारे विवाह की बात बता दो। लौटते समय अपने छोटे भाई को भी साथ लेते आओ।"

राजा की यह बात सुनते ही तीनों भाई घबरा गये। उन्होंने सोचा—अगर राजा उनके छोटे भाई करिमित्र को देखें तो तुरंत समझ जायेंगे कि वह भील जाति का है। साथ ही यह बात भी प्रकट हो जायगी कि वे भी भील हैं। इसलिए उन तीनों ने राजा के विचार को बदलने की कई तरह से कोशिश की। परंतु राजा ने हठ के साथ कहा—"तुम्हारे माता-पिता के पास उपहार भेजना मेरा कर्तव्य है। तुम्हें उपहारों को ले जाना होगा।"

घर लौट कर जब तीनों भाइयों ने अपने पिता से यह बात कही कि तीनों ने सैनिकों के रूप में अच्छे ओहदे पाये और राजकुमारियों के साथ शादियाँ भी की हैं, तब भील सरदार बहुत खुश हुआ। लेकिन यह खबर सुनकर वह दुखी हुआ कि राजा

ने उनके छोटे भाई को भी साथ लाने का आदेश दिया है। उस बूढ़े को करिमित्र से अलग रहना पसंद न था। फिर भी वह इसलिए आपत्ति न उठा सका कि वह राजा का दामाद बनकर आराम की जिंदगी जियेगा। इसलिए करिमित्र को भी उनके साथ भेजने की सम्मति दी।

करिमित्र भी छोटी राजकुमारी को देखने के लिए ललचा उठा। रास्ते-भर में वह अपने बड़े भाइयों से छोटी राजकुमारी के बारे में तरह-तरह के सवाल करता रहा। आखिर उसके सवालों से तंग आकर तीसरे भाई ने कहा—"अरे बुद्धू! चुप रहो,

तुम्हारा काला चेहरा देख राजा भी अपनी लड़की देने से शायद इनकार कर बैठे!"

"काले होने से क्या हुआ? क्या भील काले नहीं होते?" करिमित्र ने विचित्र स्वर में पूछा।

"यह बात राजा को मालूम नहीं होनी चाहिये। राजा भीलों से घृणा करता है।" बड़े भाइयों ने कहा।

"तब तो राजा ने अपनी लड़कियों के साथ तुम लोगों की शादियाँ कैसे कीं?" करिमित्र ने अपने बड़े भाइयों से पूछा।

"हमने उनसे यह थोड़े ही कहा कि हम भील जाति के हैं। हम ने उन्हें मगध वासी बताया है। तुमको भी यही बात कहनी है।" भाइयों ने समझाया।

"मैं झूठ नहीं बोलूंगा। अपने को भील बताने में मुझ शर्म नहीं है।" करिमित्र ने साफ़ बता दिया।

बड़े भाइयों को छोटे का व्यवहार देख डर लगा। उन लोगों ने सोचा कि उसे किसी नदी में फेंक दें तो वे खतरे से बच सकते हैं। तीसरा भाई छोटे को मार डालने के लिए एक दम तैयार हो गया। लेकिन सब से बड़ा भाई उसे मारना नहीं चाहता था। वही छोटे को अपने घोड़े पर ला रहा था।

एक दिन रात को चारों ने एक जंगल में पड़ाव डाला। खाना खाकर लेटे गये। उनका विचार था कि करिमित्र के सोते ही वे तीनों घोड़ों पर चले जायेंगे। चाहे छोटे की जो भी हालत हो जाय।

परंतु घोड़ों की हिनहिनाहट सुनकर करिमित्र जाग पड़ा। अपने भाइयों को घोड़ों पर सवार होते देख वह ज़ोर से रो पड़ा। दूसरे और तीसरे छोटे की परवाह किये बिना अपने घोड़ों को दौड़ा दिये, लेकिन बड़ा भाई छोटे के रुदन को देख पसीज उठा और उसे फिर अपने घोड़े पर बिठा कर रवाना हुआ।

"क्या मुझे जंगल में छोड़कर भागना चाहते हैं?" करिमित्र ने पूछा।

"नहीं! हम तुम्हारी हिम्मत की जाँच करना चाहते थे।" बड़े भाई ने कहा।

करिमित्र अपने भाइयों के लिए एक समस्या बन बैठा। तीसरा भाई उसका पिंड छुड़ाने के लिए परेशान रहने लगा। परन्तु बड़ा भाई छोटे को तकलीफ़ में डालने से सकुचाने लगा। दूसरा कुछ लापरवाह रहने लगा कि अभी जल्दी क्या है, सोचने के लिए काफ़ी समय है। वह समय भी निकट आया। वे जिस नगर में जाना चाहते थे, उसके समीप पहुँच गये।

राजा के किले से लग कर पालतू सिंहोंवाली बाड़ी थी। तीनों ने निश्चय किया कि करिमित्र को सिंहों के बीच गिरा दें। यह काम करने को तीसरा भाई तैयार हो गया। तीसरे भाई ने जब करिमित्र को पकड़कर अपने हाथों से ऊपर उठाया तब उसने सोचा कि इस बार भी उसकी हिम्मत की जाँच कर रहे हैं। करिमित्र को सिंहों की बाड़ी में डालकर तीनों भाई किले में पहुँचे और राजा से बताया कि उनका भाई मर गया है।

करिमित्र सिंहों के बीच गिरा, मगर खुश क़िस्मती से उसे चोट न आयी। सिंहों ने उसे घेरकर सूँघ तो लिया, लेकिन उसको कोई हानि न की। उन्हें भूख भी न थी। सब से छोटी राजकुमारी सिंहों को पालती थी। इसलिए वह रोज़ उनको पेट-भर खाना खिलाती थी।

करिमित्र ने भी कभी सिंहों को न देखा था। उसने बिल्ली-कुत्तों के जैसे उनकी पीठ पर हाथ फेरा। उस रात को वह सिंहों के बीच आराम से सो गया।

दूसरे दिन सवेरे राजा की छोटी लड़की कल्याणी सिंहों को खाना खिलाने वहाँ आ

वहाँ पर जाकर करिमित्र को देख पूछा–"तुम कौन हो? यहाँ क्या करते हो?"

"पिताजी, यह बड़ा अच्छा लड़का है। इसके भाई दुष्ट हैं। इसे हमारे सिहों के बीच गिराया था। मैं उसकी रक्षा करके यहाँ लायी हूँ।" कल्याणी ने कहा।

"बेटी, क्या तुम नहीं जानती? ये जंगली बड़े ही बदमाश होते हैं। यह हमारे महल में नहीं रह सकता। जंगली आदमी से दोस्ती नहीं करनी चाहिये।" यह कहकर राजा करिमित्र को अपने साथ ले गया और घुड़साल के प्रधान को आदेश दिया–"इसे घोड़ों का काम सिखला दो।"

करिमित्र को अच्छे कपड़े दिये गये। दरबारी लोगों के घोड़ों पर चढ़ते व उतरते समय मदद देने का काम उसे सौंपा गया।

एक दिन करिमित्र को देख उसके बड़े भाई का चेहरा सफ़ेद हो उठा। उसने पूछा–"तुम्हारा क्या नाम है?"

"करिमित्र" छोटे ने जवाब दिया। लेकिन उसने यह प्रकट होने न दिया कि उसने अपने बड़े भाई को पहचान लिया है। लेकिन मन ही मन वह बहुत ही नाराज़ था।

बड़े भाई ने अपने छोटे भाइयों से कहा–"हमारा छोटा भाई करिमित्र जिंदा है। वह घोड़ों की देखभाल करता है। मैंने अपनी आँखों से उसे देखा है। लगता है कि उसने अभी तक यह नहीं बताया कि हम उसके बड़े भाई हैं। कह देता तो राजा हमें भगा देते!"

"अब तक उसने हमारा रहस्य प्रकट नहीं किया तो जल्द प्रकट कर देगा। उसे जहर खिला देंगे।" तीसरे भाई ने कहा।

बड़े भाई के मन में अब भी करिमित्र के प्रति ममता भरी थी। उसे प्रसन्नता हुई कि वह अभी तक जिंदा है। उसने जल्दबाजी में आकर करिमित्र के जिंदा रहने का समाचार अपने भाइयों को बता

किया था। जिससे उसके प्राणों के लिए खतरा पैदा हो गया। इसलिए उसने कहा—"ज़हर की बात मैं देख लूँगा।"

ज़हर के बदले नशीली दवा रसोइये के हाथ में देते बड़े भाई ने कहा—"करिमित्र के भोजन में यह दवा मिला दो।" रसोइये ने वैसा ही किया।

उस शाम को करिमित्र जब नशीली दवा मिला खाना खानेवाला था, तब कल्याणी सबकी आँख बचाकर घुड़साल में आयी। बात करते करिमित्र का खाना दोनों ने खा लिया। वहीं पर करिमित्र के सोने के लिए एक तख्ता पड़ा था। उस पर दोनों लेटकर नशे में डूब गये।

इस बीच में तीसरे भाई यह देखने घुड़साल में आया कि करिमित्र अभी तक ज़िंदा है या मरा है। उसने नशे में बेहोश करिमित्र और राजकुमारी को देखा। तब बड़े भाई के पास जाकर बोला—"तुमने धोखा दिया है। करिमित्र मरा नहीं, बल्कि सो रहा है। राजकुमारी कल्याणी भी वहीं पड़ी सो रही है।"

"बहुत ही अच्छा हुआ। हम अपने छोटे भाई को मारकर पाप के गढ़े में क्यों गिरे? यह समाचार हम राजा को सुना दें तो जो कुछ करना है, वे ही करेंगे।" दूसरे भाई ने कहा।

तीसरे भाई ने राजा के पास जाकर कहा—"हमारी कल्याणी किसी युवक से दोस्ती कर रही है। आप आकर खुद देख लीजिये।" यह कह वह राजा को भी घुड़साल में ले आया।

राजा क्रोध से आग बबूला हो उठा। उसने राजभटों को बुलाकर आदेश दिया—"इन दोनों को ले जाकर नदी में बहा दो।" राजभट उस तख्ते के साथ दोनों को उठा ले जाकर नदी में छोड़ आये।

[शेष अगले अंक में]

दत्तात्रेय के दर्शन

प्राचीन काल में मगध देश पर राजा दिवाकर वर्मा शासन करता था। उन दिनों में मगधवासी दत्तात्रेय के दर्शन को महान भाग्य समझते थे। अनेक नगरवासी यह कहा करते थे कि उन्हें दत्तात्रेय के दर्शन हुए, जिस से उनके सारे कष्ट दूर हो गये हैं।

एक बार राजा दिवाकर वर्मा ही अनेक कठिन समस्याओं में फँस गये। शासन के कार्य में कई जटिल समस्याएँ पैदा हो गयीं। उसी वक्त पारिवारिक समस्याओं ने उनके दिल को अशांत बना दिया। उस हालत में उन्होंने सोचा—"मुझे इस समय दत्तात्रेय के दर्शन हो जाय तो क्या ही अच्छा हो!"

राजा ने बहुत दिन तक अपने मन में दत्तात्रेय का ध्यान किया और प्रार्थना की कि उन्हें दर्शन दे। लेकिन उनका ध्यान व प्रार्थना सफल न हुई।

इसलिए एक दिन राजा ने सारे देश में ढिंढोरा पिटवाया कि अगर कोई उन्हें दत्तात्रेय के दर्शन करा दे तो उसे मुँह माँगा धन दिया जायगा।

राजधानी में एक सज्जन पुरुष था। एक समय वह बड़ा धनी था, किंतु दुर्भाग्य से वह ऋणी बन गया था। उसने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज, अगर आप मुझे एक हजार दीनार दिलवा दें तो मैं आप को एक महीने के अन्दर दत्तात्रेय के दर्शन करा दूँगा।"

राजा ने तुरंत अपने खजाने से एक हजार दीनार मंगवाकर उसे देते हुए कहा—"मैं तुम्हारी बातों पर यकीन करके धन दे रहा हूँ। एक महीने के अन्दर अगर तुम मुझे दत्तात्रेय के दर्शन न कराओगे, तो तुम्हारा सर उड़ा दिया जायगा।"

रवीन्द्र मोहन

"जी महाराज! ऐसा ही कराइये।" यह कहकर वह आदमी धन लेकर घर चला गया। उस धन से अपना सारा कर्ज चुका दिया और अपनी पत्नी तथा पुत्रों से कहा–"अब मैं मर भी जाऊँ तो मुझे कोई चिंता नहीं। इस संसार में ऋण चुकाने से बढ़कर कौन मुक्ति है? मैंने इज्जत की जिंदगी बितायी और इज्जत की मौत मर जाऊँगा।"

वह महीने के पूरा होने का इंतजार करता रहा। आखिरी दिन अपनी पत्नी और पुत्रों से विदा लेकर राजसभा में गया और बोला–"महाराज, आज महीना पूरा होने को है। मैं आपको दत्तात्रेय के दर्शन न करा सका, इसलिए आप अपनी इच्छा के अनुसार मुझे दण्ड दीजिये।"

"इस दगाबाज को कैसा दण्ड देना है?" राजा ने अपने मंत्रियों से पूछा।

एक ने कहा कि उसका शिरच्छेद कराना है। दूसरे ने फाँसी पर चढ़ाने की बात कही। तीसरे ने उसकी बोटी-बोटी काटकर चीलों को खिलाने की सलाह दी।

इतने में उस व्यक्ति के पीछे से एक वृद्ध व्यक्ति राजा के सामने आया और बोला–"महाराज! इस व्यक्ति के द्वारा आपको दत्तात्रेय के दर्शन हुए हैं। इसे दण्ड देने की बात आप क्यों सोचते हैं?" यह कहकर वह वृद्ध अदृश्य हो गया।

"दत्तात्रेय के दर्शन हुए। मैं धन्य हो गया हूँ।" ये शब्द कहते राजा ने उस व्यक्ति से क्षमा माँगी। उसे असंख्य उपहार देते हुए कहा–"महाशय! युग युगों तक दरिद्रता से दूर रहकर सुखी जीवन बिताओ।" यह कहकर राजा उसे घर भेजा।

हस्तिनापुर के निकट जंगल में हिरण्यधनु नामक एक भील सरदार रहा करता था। एकलव्य उसका पुत्र था। एकलव्य ने सुना कि द्रोण नामक आचार्य के पास देश-भर के ही नहीं, सुदूर देशों से भी राजकुमार आकर धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहे हैं। वे सब उनके शिष्य बनकर धनुर्विद्या सीख रहे हैं। उसने द्रोण के पास आकर प्रार्थना की कि उसे भी अपना शिष्य बनावें। द्रोण को जब मालूम हुआ कि एकलव्य भील कुमार है, तब उन्होंने उसे अपना शिष्य बनाने से इनकार किया।

एकलव्य ने बड़ी विनय के साथ द्रोण को प्रणाम किया और उन से विदा लेकर जंगल में चला गया। जंगल में उसने द्रोण की एक मिट्टी की मूर्ति बनायी। उस मूर्ति के सामने खड़े हो एकलव्य ने बाण-विद्या का अभ्यास शुरू किया। इस अभ्यास के कारण वह द्रोण के सभी शिष्यों में आगे बढ़ गया।

एक दिन द्रोण के शिष्य शिकार खेलने एकलव्य के रहनेवाले जंगल में आये। शिकारी कुत्तों में से एक भटक गया और हिरण का चमड़ा पहने धूलिधूसरित एकलव्य को देख भूंकने लगा। एकलव्य ने उसकी ध्वनि के आने वाली दिशा में निशाना साधकर एक ही साथ सात बाण छोड़ दिये। वे सातों बाण कुत्ते के मुंह में जा लगे।

८. एकलव्य

यह कुत्ता चीखते-चिल्लाते राजकुमारों के पास भूँकते हुए वापस लौट आया।

राजकुमारों ने कुत्ते के मुँह में बाण देख सोचा कि जिसने ये बाण कुत्ते के मुँह पर सी दिये हैं, वह बड़ा धनुर्धर होगा। यह सोचकर वे लोग उसकी खोज में निकल पड़े। आखिर उन्हें एक जगह एकलव्य दिखाई पड़ा। लेकिन राजकुमारों ने उसे पहचाना नहीं, इसलिए उससे पूछा–"तुम कौन हो? तुम्हारे पिता कौन हैं? तुम्हारे गुरु कौन हैं?"

एकलव्य ने उन्हें उत्तर दिया–"मैं एक भील सरदार का लड़का हूँ। मेरा नाम एकलव्य है। मैं द्रोणाचार्य को अपने गुरु मानकर धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा हूँ।"

राजकुमारों ने हस्तिनापुर लौटकर द्रोण को एकलव्य का समाचार सुनाया। अर्जुन को इस बात की चिंता होने लगी कि एकलव्य उस से भी बढ़कर धनुर्धारी होगा! उसने द्रोण से पूछा–"गुरुदेव! आपने कहा था कि आप मुझे ऐसी विद्या सिखायेंगे कि इस दुनिया में मुझसे बढ़कर कोई धनुर्धारी न होगा। लेकिन मालूम होता है कि आपने मुझसे भी अच्छी विद्या एकलव्य को सिखायी है!"

अर्जुन की बातें सुनने पर द्रोणाचार्य को आश्चर्य हुआ। वे अपने सभी शिष्यों से कहे बगैर केवल अर्जुन को साथ ले एकलव्य के पास पहुँचे।

धनुर्विद्या के अभ्यास में निमग्न एकलव्य ने द्रोणाचार्य को देख उन्हें प्रणाम किया। अतिथि-सत्कार के बाद सामने खड़े होकर बोला–"गुरुदेव! मैं आपका एक शिष्य हूँ!"

"अगर तुम मेरे शिष्य हो तो मुझे दक्षिणा में क्या दोगे?" द्रोणाचार्य ने एकलव्य से पूछा।

"ऐसी कौन चीज है जो गुरुदक्षिणा के रूप में आपको न दे सकूँ? यह सारा शरीर आप ही का है।" एकलव्य ने जवाब दिया।

"ऐसी बात हो तो तुम अपने दायें हाथ का अंगूठा काटकर मुझे दे दो।" द्रोणाचार्य ने पूछा।

एकलव्य ने जरा भी संकोच किये बिना अपने दायें हाथ का अंगूठा काटकर द्रोण को दे दिया। इसके बाद उसने अपने धनुष को बायें हाथ से पकड़कर, दायें हाथ की बाकी उंगलियों से बाण चलाने का अभ्यास किया। लेकिन धनुर्विद्या में उसका कौशल पहले जो था, उसे खो चुका था।

इस तरह अर्जुन के संदेह और डर को दूरकर द्रोण उसे सांत्वना देते हस्तिनापुर लौट आये।

द्रोण के पास राजकुमारों ने सभी विद्याएँ सीखीं। लेकिन वे अलग-अलग विद्याओं में प्रवीण हुये। युधिष्ठिर रथ चलाने में प्रवीण बने। गदा-युद्ध में भीम और दुर्योधन कुशल बनें। अर्जुन धनुर्विद्या में असाधारण प्रवीण निकला। इस विद्या में उसका बुद्धि-बल, बाण-प्रयोग और निपुणता दूसरों को प्राप्त नहीं हुई। अश्वत्थामा

युद्ध के रहस्यों में बेजोड़ निकला। नकुल और सहदेव खड्ग-विद्या में असाधारण प्रवीण निकले।

भीम का गदा-युद्ध में कौशल तथा अर्जुन की धनुर्विद्या में प्रवीणता देख दुर्योधन आदि कौरव ईर्ष्या करते थे।

एक दिन गुरु द्रोण ने अपने शिष्यों के निशान साधने की विद्या की जाँच करनी चाही। उन्होंने एक चील की गुड़िया बनवायी। उसे एक पेड़ पर इस तरह रखवाया कि वह आसानी से दिखाई न पड़े। इसके बाद अपने सभी शिष्यों को उस पेड़ के पास ले जाकर बोले—"इस

पेड़ पर पत्तों के बीच पंछी का जो गुड़िया है, वह ध्यान से देखने पर दिखाई देगी। तुम सब धनुष्यों पर बाण चढ़ा कर तैयार रहो। मेरे कहते ही उस पर ऐसे बाण चलाओ कि पक्षी का सर कट जाय।"

पहली बारी युधिष्ठिर की थी।

"ठीक से देखो, युधिष्ठिर! क्या तुम्हें चिड़िया दिखाई देती है?" द्रोण ने पूछा।

"गुरुदेव, दिखाई देती है!" युधिष्ठिर ने कहा।

"चिड़िये के साथ तुमको मैं और बाकी राजकुमार भी दिखाई देते हैं?" द्रोण ने फिर पूछा।

"जी हां, सब दिखाई देते हैं।" युधिष्ठिर ने उत्तर दिया।

"तब तो तुम्हारी दृष्टि निशाने पर नहीं है। तुम चिड़िये के सर को काट नहीं सकते।" द्रोण ने कहा।

द्रोण ने एक-एक को बुलाकर इसी प्रकार पूछा—सब ने युधिष्ठिर की भांति जवाब दिया।

आखिर अर्जुन ने आकर चिड़िया की ओर देखा। द्रोण के पूछने पर उसने यही जवाब दिया कि उसे केवल चिड़िया ही दिखायी देती है।

"चिड़िये पर बाण चलाओ!" द्रोण ने आदेश दिया। दूसरे ही क्षण चिड़िये की गुड़िये का सर कटकट नीचे जा गिरा।

द्रोण ने अर्जुन की तारीफ़ की। उन्होंने मन में सोचा कि द्रुपद को युद्ध में केवल अर्जुन ही जीत सकता है।

एक दिन द्रोण अपने सभी शिष्यों को साथ लेकर यमुना नदी में स्नान करने गये। द्रोण जब स्नान कर रहे थे, तब एक मगर-मच्छ ने उनकी जांघ को पकड़ लिया। वे चिल्ला पड़े कि मगर-मच्छ को बाण चलाकर मार डालें। सब ने बाण चलाये, पर किसी का बाण मगर-मच्छ पर

आ नहीं लगा। वे यह सोचकर डर गये कि बाण गुरु को जा लगेंगे। केवल अर्जुन ने ही पाँच बाण इस तरह चलाकर मगर-मच्छ को मार डाला कि उनमें एक बाण भी द्रोण की जांघ पर न लगा।

द्रोण ने अर्जुन की प्रशंसा करते हुए कहा—"अर्जुन! तुम्हारा कौशल अद्भुत है। मैं तुम्हें ब्रह्मशिरोनामक अस्त्र का प्रयोग मंत्र के साथ सिखाऊँगा। उसका प्रयोग तुमको मानवातीत व्यक्तियों पर ही करना होगा। साधारण मानव पर उसका प्रयोग करोगे तो ये सभी लोक जल जायेंगे।"

अर्जुन की प्रसन्नता की सीमा न रही। उसने उसी समय स्नान किया और द्रोणाचार्य द्वारा ब्रह्मशिरोनामक अस्त्र का उपदेश पाया।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन द्रोणाचार्य धृतराष्ट्र के दरबार में पहुँचे। वहाँ पर व्यास, भीष्म, विदुर, कृप, बाह्लिक, सोमदत्त आदि बुजुर्ग बैठे हुए थे।

द्रोण ने धृतराष्ट्र से कहा—"महाराज, राजकुमारों ने मेरे पास धनुर्विद्या सीख ली है। आप एक बार उनके कौशल की परीक्षा लीजिये।"

इस पर धृतराष्ट्र ने द्रोण से कहा—"आचार्यवर, आपने हमारा बड़ा ही उपकार किया है। आप ही यह निर्णय कीजिए कि राजकुमारों की विद्या का प्रदर्शन कहाँ पर और कब हो? अन्य प्रबंध मैं करवाये देता हूँ।"

यह सारा प्रबंध करने का काम विदुर को सौंपा गया। बहुत अच्छा प्रबंध किया गया। धनुर्विद्या के प्रदर्शन का प्रदेश साफ़ किया गया। प्रेक्षकों के बैठने के लिए चारों तरफ़ आसनों की व्यवस्था की गयी। उत्तरी दिशा में प्रवेश-द्वार बनाया गया। प्रेक्षकों के लिए मंच तैयार किये गये।

एक अच्छे मुहूर्त में प्रदर्शन का प्रबंध किया गया। प्रदर्शन को देखने सभी प्रमुख

व्यक्ति आ पहुँचे। गांधारी, कुंती इत्यादि अंतःपुर की स्त्रियाँ पालकियों में आयीं। सब अपने अपने स्थानों पर विराजमान हुए। तब द्रोण अश्वत्थामा को साथ लेकर आये और प्रदर्शन के मध्य भाग में खड़े हो गये। उनके सभी शिष्य कवच, धनुष्य-बाण व तूणीर धारण कर, हाथों में तरह-तरह के अस्त्र लेकर प्रदर्शन-स्थल में पहुँचे। सब से आगे युधिष्ठिर और उनके पीछे अन्य राजकुमारों ने रंगस्थल में प्रवेश किया।

सब ने रथ, हाथी व घोड़ों पर रंगस्थल में अनेक प्रकार के प्रदर्शन किये और अपने अस्त्रों के कौशल का प्रदर्शन भी किया। धनुर्विद्या में अपनी प्रवीणता दिखायी। प्रेक्षक डर गये थे कि कहीं भूल से उन्हें बाण न लग जायें। रंगस्थल पर जो कुछ प्रदर्शन हो रहे थे, उनका परिचय धृतराष्ट्र को विदुर ने तथा गांधारी को कुंती ने दिया।

थोड़ी देर बाद भीम और दुर्योधन गदा लेकर आ पहुँचे और गदा-युद्ध आरंभ किया। यह युद्ध केवल प्रदर्शन के लिए प्रबंध किया था। फिर भी कुछ लोगों ने भीम को तथा कुछ अन्य लोगों ने दुर्योधन को उकसाना शुरू किया। तब द्रोण ने गदा-युद्ध रुकवाने का अश्वत्थामा को आदेश दिया।

अंत में अर्जुन प्रदर्शन-केन्द्र में आये। उसको देखते ही प्रेक्षकों ने हर्षनाद किये। धृतराष्ट्र ने विदुर से पूछा–"यह कोलाहल कैसा है, भाई?" विदुर ने उनको समझाया।

अर्जुन का प्रदर्शन कल्पना से बाहर था। उसने अनेक दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करके वायु, अग्नि, मेघ इत्यादि की सृष्टि की। एक अस्त्र के प्रयोग के साथ वह अंतर्धान भी हो गया। उसका निशाना अपूर्व था। गोल चक्कर काटनेवाले सुअर के खिलौने के
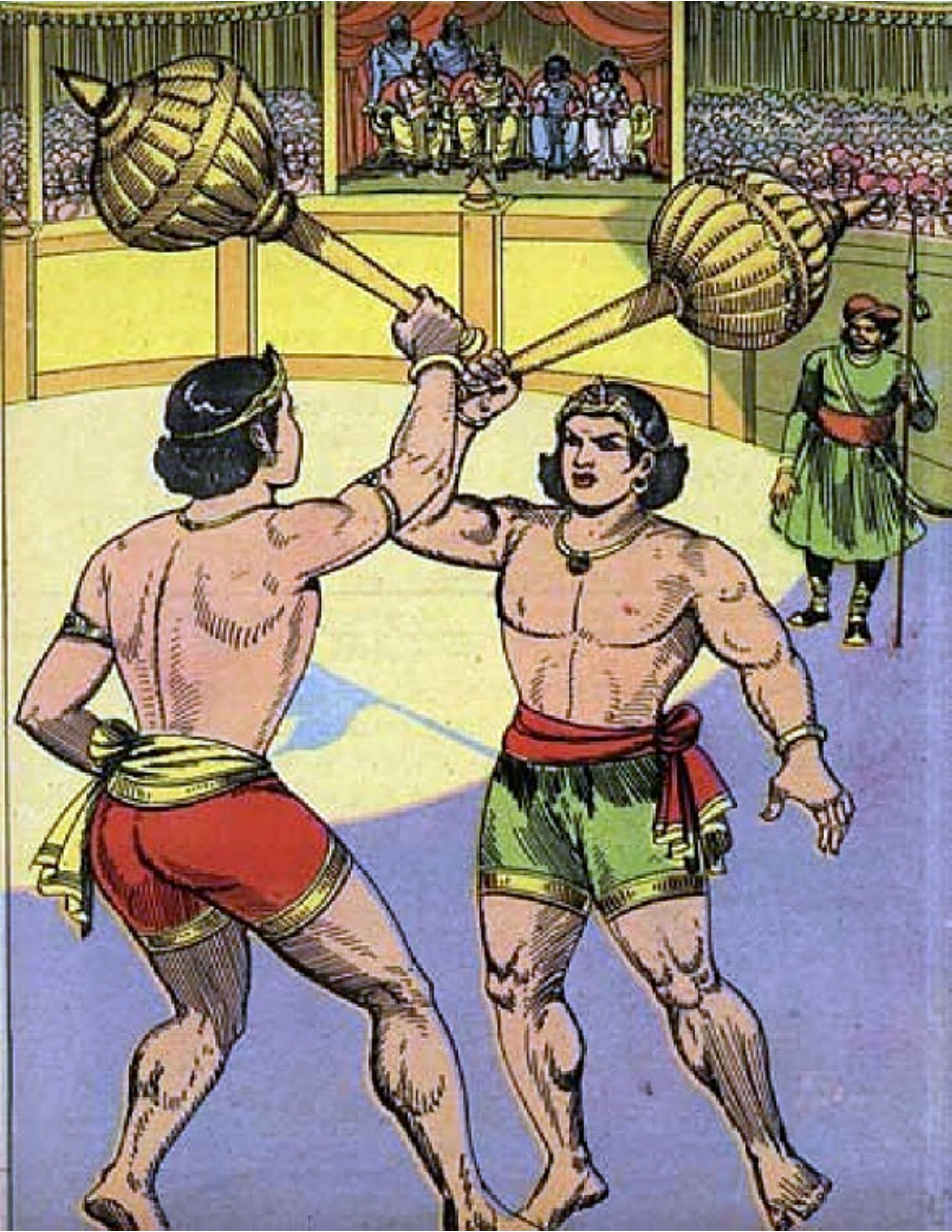
मुँह पर एक ही बार पाँच बाण चलाये। गाय के एक सींग में इक्कीस बाणों का इस तरह प्रयोग किया कि बिना निशाने के चूके सभी बाण उसमें जा घुसे।

राजकुमार सब अपनी अपनी विद्याएँ प्रदर्शित कर रंगस्थल से बाहर गये। तब वहाँ पर जन्मजात कवच और कुण्डलों की कांति से बाल-सूर्य की भाँति चमकते कर्ण धनुष और बाण लेकर आ पहुँचा। उसने द्रोणाचार्य तथा कृपाचार्य को प्रणाम किया। इसके बाद गंभीर स्वर में बोला—"अरे अर्जुन! तुम समझते हो कि धनुर्विद्या में तुम्हीं प्रवीण हो! तुमने जो जो विद्याएँ प्रदर्शित कीं, वे सब मैं भी प्रदर्शित कर सकता हूँ।"

ये बातें सुनकर अर्जुन को क्रोध आया और उसे अपमान-सा भी लगा। प्रेक्षकों के बीच जिज्ञासा भी पैदा हुई। वास्तव में कर्ण ने वे सब विद्याएँ प्रदर्शित कीं जिन्हें अर्जुन ने प्रदर्शित की थीं। उसी वक्त, दुर्योधन तथा उसके भाइयों ने आकर कर्ण का अभिनंदन किया और उससे गले लगकर कहा—"आज से तुम हमारे मित्र और बंधु हो। हममें से एक बनकर रहो। हमारे शत्रुओं का नाश करके हमारा हित करो।"

कर्ण ने मान लिया। तब द्रोणाचार्य से पूछा कि उसे अर्जुन के साथ द्वन्द्व युद्ध करने की अनुमति दे। अर्जुन द्वन्द्व युद्ध के लिए भी तैयार हो गया। अपने पुत्र को द्वन्द्व युद्ध के लिए तैयार होते देख कुंती मूर्छित हो गयी। सखियाँ उसे होश में लायीं।

तब कृपाचार्य ने कर्ण से कहा—"बेटा तुम्हारा वंश कौन-सा है? तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? तुम क्षत्रिय न हो तो अर्जुन तुम्हारे साथ द्वन्द्व-युद्ध नहीं कर सकता।"

कर्ण अपने को पालनेवाले माता-पिता का नाम बताने में लजा गया।

[८]

सन् १९०४ की बात है। गांधीजी एक बार जोहान्सबर्ग से डर्बन जा रहे थे, तब उनके मित्र पोलाक नामक एक संवाददाता ने उन्हें "अन् टू दिस लास्ट" नामक पुस्तक दी। वह अंग्रेजी लेखक जान रस्किन द्वारा रचित पुस्तक थी। उसमें रस्किन ने सादा जीवन और श्रमपूर्ण जीवन की बड़ी प्रशंसा की थी। उन्होंने ऐसे अर्थशास्त्रवेत्ताओं की आलोचना भी की थी जिन्होंने जनता के कल्याण पर ध्यान न दिया था। उस पुस्तक को पढ़ने पर गांधीजी के विचार और भी पक्के हो गये। डर्बन में गाड़ी से उतरने के पहले ही गांधीजी ने निश्चय कर लिया कि रस्किन के विचारों को अमल में लाना चाहिए। डर्बन में 'इंडियन ओपिनियन' नामक एक पत्रिका थी। उसके मुद्रणालय का काम अल्बर्ट वेस्ट नामक एक गोरे व्यक्ति देखा करते थे। वे गांधीजी के मित्र थे। यह सोचा गया कि उस पत्रिका को एक कृषि-क्षेत्र से प्रकाशित किया जाय और वहीं रहकर सब कार्यकर्ता मेहनत करके ज़िंदगी बिताये। इस संबंध में गांधीजी ने वेस्ट से सलाह-मशविरा किया।

गन्ने के खेतों के बीच एक सौ एकड़ का प्रदेश हज़ार पौण्डों में खरीदा गया। वह फिनिक्स रेल्वे स्टेशन से ढाई मील की दूरी पर था। उस क्षेत्र में सर्व प्रथम निवास बनानेवालों में गांधीजी, पोलाक, वेस्ट तथा गांधीजी के साथ दक्षिण आफ्रिका आये हुए लोग थे। उसमें प्रेस के लिए एक बड़ा चौपाल तथा निवासों के लिए

आठ घर तैयार किये गये। प्रत्येक व्यक्ति के लिए तीन एकड़ ज़मीन दी गयी।

उस शान्तिपूर्ण जीवन का प्रधान केन्द्र गांधीजी का निवास था। हर रविवार को उस कोलनी के निवासी गांधीजी के निवास में इकट्ठे हो जाते थे। प्रार्थनाएँ होतीं, गीता-पठन, बाइबिल का पाठ, ईसाई प्रार्थना संबंधी गीत, गुजराती के भजन, गीत आदि कार्यक्रम होते। जाति, धर्म इत्यादि का भेदभाव बिलकुल रखा न जाता था। गांधीजी को यहाँ पर मानव की दुराशा, द्वेष इत्यादि से दूर रहकर आत्म-चिंतन करने का अच्छा मौका मिला। लेकिन उनके पेशे व राजनीति ने उन्हें बहुत समय तक इस प्रकार मौन बैठने नहीं दिया।

१९०६ में गांधीजी ने अपनी पत्नी को समझाकर ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। तब वे पूरे चालीस साल के भी हो न पाये थे। तब तक उनके चार पुत्र हुए थे। ब्रह्मचर्य व्रत ने उनमें नैतिक बल भी बढ़ा दिया। लेकिन यह व्रत आसान न था। आत्म निग्रह के लिए गांधीजी को भोजन में काफ़ी परिवर्तन भी करना पड़ा। उन्होंने नमक, दूध व दाल लेना बंद कर दिया। उपवासों के द्वारा उन्हें फ़ायदा मालूम होने लगा। आखिर उन्होंने समझ लिया कि केवल देह पर नियंत्रण रखना पर्याप्त नहीं है, बल्कि मन पर नियंत्रण रखना ज़रूरी है। यह भी समझा कि समस्त प्रकार की इच्छाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए। परिवार-नियंत्रण उनके लिए मोक्ष-साधन का मार्ग मालूम हुआ।

गांधीजी के ब्रह्मचर्य व्रत लेने के कुछ ही दिन बाद उन्हें सत्याग्रह प्रारंभ करना पड़ा।

१९०५ और १९०६ में ट्रान्सवाल के भारतीयों की हालत और बिगड़ गयी। दक्षिण आफ्रिका की सरकार ने भारतीयों के प्रवेश को रोकने के लिए एक और

क़ानून चालू किया। उस क़ानून के अनुसार प्रत्येक भारतीय पुरुष, नारी और आठ साल के ऊपर के बच्चे को रजिस्टर के कागज़ों पर अंगूठे की छाप लगाकर पंजीकृत होना चाहिए। नाबालिग बच्चों से अंगूठे की छाप नहीं लगवाते हैं तो उन्हें जुर्माना देना पड़ता था। जेल या देश-निकाला सज़ा दी जाती थी। प्रत्येक भारतीय को जहाँ चाहे, जब चाहें, अपने अनुमति-पत्रों को अधिकारियों के पूछने पर दिखाना पड़ता था। इस क़ानून के बनने के पहले दक्षिण आफ्रिका में अनुमति पाये बिना आये हुए १५० भारतीयों पर कार्रवाही की गयी। एक भारतीय नारी को अपने पति से अलग करके आफ्रिका को छोड़कर जाने के लिए सिर्फ़ ७ घंटे का समय दिया गया। ११ साल के लड़के को गिरफ़्तार करके ३० पौण्ड जुर्माना अथवा तीन महीने की क़ैद की सज़ा सुना दी गयी।

गांधीजी ने भली-भाँति समझ लिया कि यह नया क़ानून अमल में आ जाय तो भारतीयों की क्या हालत होगी। ऐसे क़ानून के शिकार बनने की अपेक्षा भारतीयों का मर जाना ही गांधीजी ने उचित समझा। लेकिन विजय या मृत्यु का फ़ैसला करने के लिए भारतीयों को क्या करना चाहिए? यही उनकी समझ में न आयी।

बोअरों तथा ब्रिटीशवालों के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें भारतीयों ने ब्रिटीशवालों की विजय के लिए योग दिया, इसी का यह परिणाम हो गया था। युद्ध के बाद दोनों जातिवाले भारतीयों के साथ अन्याय करने पर तुल गये। इससे गांधीजी ने बारह वर्षों से नेटाल और ट्रान्सवाल के भारतीयों को प्राथमिक अधिकार दिलाने का जो प्रयत्न किया, वह बेकार साबित हुआ। वे इस बीच थोड़े से गोरों, ईसाई मशनरियों के भीतर चेतना जगा

सकें। जनरल स्मट्स के कथनानुसार गोरे लोगों ने दक्षिण आफ्रिका को गोरों का देश बनाने का संकल्प किया। परन्तु हिन्दुस्तान में भारतीयों को सहायता मिलना मुश्किल था। हिन्दुस्तान में ही उन्हें अधिकार प्राप्त न थे, ऐसी हालत में वे प्रवासी भारतीयों को अधिकार कैसे दिला सकते थे? इंग्लैण्डवालों की दृष्टि में दक्षिण आफ्रिका की सरकार स्वतंत्र थी। इसलिए दक्षिण आफ्रिका के भारतीयों को अपने अधिकारों के लिए उन्हें ही लड़ना था। उन्हें मतदान का अधिकार न था और न विधान सभाओं में प्रतिनिधित्व प्राप्त था।

११ सितंबर १९०६ को जोहान्सबर्ग के एम्पाइर थियेटर में एक सभा हुई। गांधीजी ने एक मसविदा तैयार किया, जिसके अनुसार एशिया के निवासियों का रिजिस्ट्रेशन स्वीकृत न किया जाय, यह निर्णय हुआ। भाषणकर्ताओं में से एक ने ईश्वर के नाम पर यह शपथ खायी कि मैं इस कानून के सामने कभी अपना सर नहीं झुकाऊँगा। उसी समय गांधीजी को लगा, मानों उनके सामने कोई प्रकाश फैल गया है। उन्होंने संकल्प किया—नये कानून का सामना करना होगा। चाहे जायदाद चली जाय, जेल जाना पड़े, इस कानून का विरोध करते हुए भगवान के नाम पर शपथ खानी होगी। गांधीजी के अनुरोध पर सभा में उपस्थित सब लोगों ने शपथ खायी। परन्तु गांधीजी के सामने अभी तक यह बात स्पष्ट न थी कि कानून के विरोध का क्या परिणाम होगा। यह निश्चित था कि हिंसाकांड न होगा। पर राजनैतिक तथा सामाजिक अन्यायों का सामना करनेवाला एक नया सूत्र अमल में आनेवाला है! उसका नाम 'सत्याग्रह' स्थिर किया गया। उसके तत्व को प्रमाणित करने में गान्धीजी को काफ़ी समय लगा।

९५. राक्षसी सेहुँड का फूल

“पूया रेमांडिई” नामक राक्षसी सेहुँड जाति का पौधा हमारे अनन्नास की जाति का है। यह अमेरिका के आंदीज पहाड़ी प्रदेश की पथरीली भूमि में होता है, जहाँ कोई भी पौधा एक गज से अधिक नहीं बढ़ता। जब पौधा १५० साल का हो जाता है, तब अचानक उसमें से ३० फुट ऊँचा फूलों का गुच्छा उगता है। उस गुच्छे में करीब ८,००० फूल होते हैं। खिलते ही फूलों का गुच्छा सूख जाता है। इन फूलों को सीढ़ियाँ लगाकर तोड़ना पड़ता है।

फूलों के गुच्छे का घेरा ८ फुट का होता है।

१८३० में सब से पहले इस पौधे का पता लगानेवाला व्यक्ति अंटोनियो रेमांडी नामक इटली देश का निवासी है। उसी के नाम पर यह “पूया रेमांडिई” कहलाता है।

पौधे पर २० फुट तक ऊपर उठनेवाले गुच्छे के डंठल पर १८ इंच लंबे फूलों की टहनियाँ गाड़ी के पहिये के पत्तों जैसे जुड़ी होती हैं।

फूलों से निकलनेवाले बीजों में ‘पर’ होते हैं जिनसे वे हवा में उड़ जाते हैं।

वहाँ के लोग ‘पूया’ के सूखे फूलों को जलाते हैं। कहा जाता है कि वे मशालों की भाँति जलते हैं।

‘पूया’ जाति के पेड़ों में कई प्रकार के हैं। उनमें एक किस्म का पौधा डेढ़ फुट ऊँचाई तक ही बढ़ता है। कुछ किस्म के पौधों से रेड इंडियन लोग पेय पदार्थ बनाते हैं और कुछ किस्म के पौधों को खाते भी हैं।

Photo by A. V. Rangaiah

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'हमारा श्रम ही जीवन दाता'

प्रेषिका : शशीबाला - भुसावल

Photo by Vidyachandra Patwa

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'हमारा जनम जनम का नाता'

प्रेषिका : शशिबाला - भुसावल

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

जनवरी १९७० :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें!

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख १० नवम्बर १९६९ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

नवम्बर – प्रतियोगिता – फल

नवम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।

इनकी प्रेषिका को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: 'हमारा श्रम ही जीवन दाता'

दूसरा फ़ोटो: 'हमारा जनम जनम का नाता'

प्रेषिका: **श्रीमती शशीबाला कश्यप,**

पो. पी.एन.आर.एस.आई. बंगला नं. १०१ बी. टाइप, जिम्नस क्लब के पास, भुसावल (महाराष्ट्र)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

भारत में पहली बार | बच्चों के लिए.... भारतीय उपहार

बाल पॉकेट बुक्स

हिन्दी में पहली बार बच्चों की अपनी **बाल पॉकेट बुक्स**

अब उन्हें बड़ों की **पॉकेट बुक्स** देखकर ललचाने की जरूरत नहीं है

पढ़ने में रोचक * देखने में सुन्दर * दामों में सस्ती पुस्तकें

जैसे ही आपकी बाल पॉकेट पुस्तकों की वी० पी० आपके पास पहुँचे, आप उसे छिपा लें क्योंकि इन्हें देखकर बच्चे, बूढ़े, नवयुवक सभी पढ़ने के लिये ललचाते हैं। सम्भव है, आपकी बाल पॉकेट बुक ले लें और माँगने पर आपको डाँटें, क्योंकि इन्हें जो पढ़ना आरम्भ करता है, बिना समाप्त किए छोड़ना नहीं चाहता है।

घरेलू बाल पुस्तकालय (योजना)

प्यारे बच्चो !

आपके पास कोर्स की पढ़ाई और खेलकूद के बाद काफी समय बचता है। अच्छी-अच्छी रोचक किताबें पढ़िए। सम्भव है, अच्छी किताबें आप को न मिलती हों। इस कमी को दूर करने के लिए हम आपकी सहायता करेंगे। आप आज ही "घरेलू बाल पुस्तकालय योजना" के सदस्य बन जाइए। इस योजना में केवल १० नये पैसे रोज खर्च होंगे और साल भर में ३६ (छत्तीस) रंग-बिरंगी, रोचक मनोरंजक पुस्तकें घर बैठे आपके पास पहुँच जाया करेंगी। इसके अतिरिक्त साल में कई बार पुरस्कार, इनाम और उपहार भी मिलेंगे।

इन पुस्तकों को पढ़ने से केवल तुम्हारा मनोरंजन ही नहीं होगा, बल्कि ज्ञान भी बढ़ेगा। यह सामान्य ज्ञान आपको आगे चलकर बड़ी ही मदद करेगा।

"घरेलू बाल पुस्तकालय योजना" के नियम पढ़कर शीघ्र ही सदस्य बनिए।

पुस्तक सूची :

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

मनमोहक बाल-उपन्यास और कहानियाँ

- बुलबुली कथा —[illegible]
- एक था राजा —[illegible]
- जंगल का आदमी —[illegible]
- सम्राट की कहानी —[illegible]
- [illegible] —[illegible]
- [illegible] —[illegible]

योजना के नियम और लाभ

१—सदस्य बनने के लिए सदस्यता-शुल्क १-०० (एक रुपया) मनीआर्डर से भेजिए।

२—जब आपका सदस्यता शुल्क १-०० (एक रुपया) हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जायेगा, तो आपकी सदस्यता का प्रमाण-पत्र तथा सदस्य-संख्या भेज दी जायेगी।

३—इसके बाद प्रति ३ मास में आपके पास ९-०० (नौ रुपये) में नौ पुस्तकें बिना डाक खर्च के वी० पी० से आपके पास पहुँच जाया करेंगी।

४—इस योजना के सदस्यों को अनेक लाभ होंगे :—

- प्लास्टिक का एक बुक-कवर मुफ्त मिलेगा।
- जनवरी में एक पाकेट डायरी मुफ्त मिलेगी।
- डाक खर्च आपको नहीं देना पड़ेगा।
- प्रति दूसरे मास 'सौभाग्यशाली सदस्यों' [लकी मेम्बर] का चुनाव होगा जिनको अनेक बहुमूल्य उपहार मिलेंगे।
- "ज्ञान भारती" पत्रिका हर सदस्य को मुफ्त मिलेगी।

पूर्ण जानकारी के लिए :

घरेलू बाल पुस्तकालय (योजना), ज्ञान भारती

विशेश्वरनाथ रोड, लखनऊ, (उ.प्र.)

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

SQUIBB

बच्चों का धर्म है निरीहता
उसका पथ है निरीहता
निरीहता की न कोई
सीमा होती, न जाति।
निरीहता ही उसके लिए
अल्लाह है, कृष्ण है और है
यीशू मसीह जो
उसका स्रष्टा है,
जो सत् है, चित है,
फूलों की बहार सत्य के
विस्फोट के
समान पुराने क़िले में आयी।
नन्हा फ़रिश्ता
ईस्टमैनकलर
बी. नागिरेड्डी (राम और श्याम के
निर्माता) कृत एक
विजया इन्टरनेशनल फ़िल्म।
निर्देशक : टी. प्रकाश राव
संगीत : कल्याणजी आनन्दजी
कहानी : तुरैयूर के. मूर्ति
संवाद : इन्दरराज आनन्द
गीत : साहिर

CHANDAMAMA (Hindi) NOVEMBER 1969 Regd. No. M. 5432